बाल संरक्षण और सहयोगी पदाधिकारियों के लिए

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन मॉड्यूल

बाल संरक्षण अधिकारियों एवं अन्य सेवा प्रदाताओं हेतु
समुदाय स्तर पर उपयोग के लिए गतिविधि–आधारित मॉड्यूल

new concept
Centre for Development Communication

स्वस्ति पन्थामनु चरेम
HCM RIPA

CRC
CHILD RESOURCE CENTRE

unicef
for every child

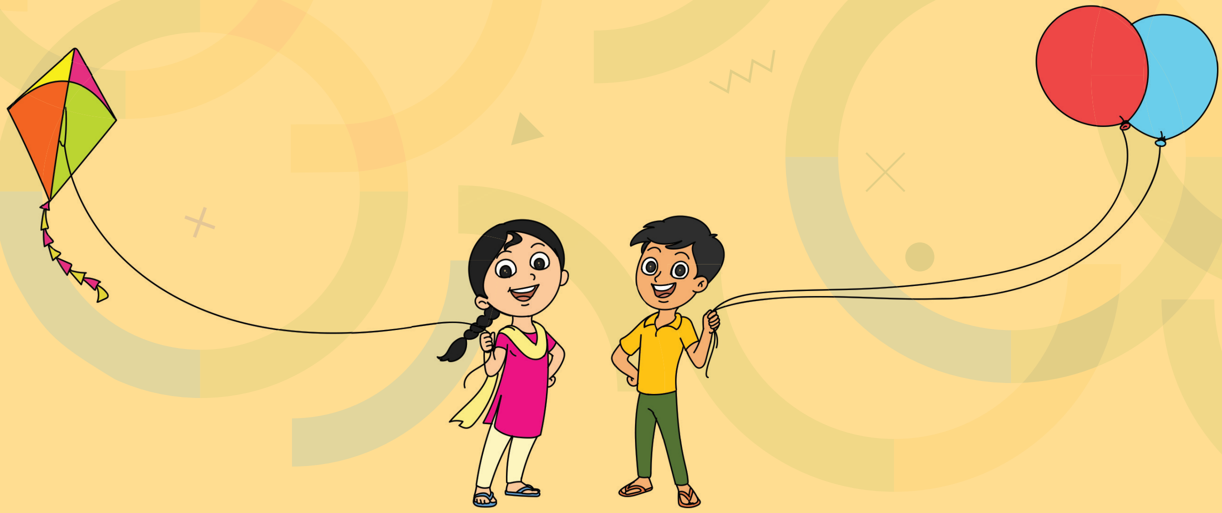

विषय–सूची

परिचय — v

सत्र 1: इच्छाओं और आवश्यकताओं के माध्यम से बाल अधिकारों को समझना — 1

सत्र 2: बाल संरक्षण को समझना — 5

सत्र 3: बाल अनुकूल संचार का महत्व — 9

सत्र 4: बच्चों के साथ खुले/निर्बाध संवाद को सुगम बनाना — 13

सत्र 5: बच्चों के साथ बातचीत में संचार की बारीकियों को समझना — 17

सत्र 6: सकारात्मक पारस्परिक संबंध बनाना — 21

सत्र 7: समूह चर्चा को सहज बनाना — 27

सत्र 8: प्रभावी संचार और संबंधों का निर्माण — 31

सत्र 9: प्रश्न पूछने की कला — 37

सत्र 10: उदाहरणों की शक्ति — 41

सत्र 11: बाल संरक्षण हेतु समावेशी (INCLUSIVE) वातावरण को बढ़ावा देना — 45

सत्र 12: बाल कल्याण हेतु सामाजिक मोबिलाइजेशन और सहायक वातावरण — 49

सत्र 13: बच्चों के साथ संचार हेतु रचनात्मक टूल — 53

सत्र 14: व्यापक बाल संरक्षण हेतु टीमवर्क और सहयोग — 57

सत्र 15: प्रभावी बाल संरक्षण के लिए संचार योजनाओं का कार्यान्वयन — 63

संलग्नक — 69

परिचय

बाल संरक्षण एक साझा ज़िम्मेदारी है। इस हेतु कई पहलूओं पर व्यापक समझ की आवश्यकता होती है, जैसे सामाजिक गतिशीलता, समुदाय की सहभागिता और स्थानीय सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ आदि। ग्राम स्तर के पदाधिकारी बच्चों के लिए एक सुरक्षात्मक वातावरण बनाने, उनकी सुरक्षा, कल्याण और समग्र विकास सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस मॉड्यूल का उद्देश्य प्रतिभागियों के ज्ञान को बढ़ाना, व्यावहारिक कौशल से सशक्त बनाना और समुदाय के भीतर प्रत्येक बच्चे के अधिकारों की सुरक्षा के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता को बढ़ावा देना है।

उद्देश्य

- यह मॉड्यूल गाँव स्तर के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करने में सहायता करेगा जिससे वे अपने समुदाय में बच्चों के लिए एक सुरक्षित वातावरण बना सकेंगे।
- इससे गाँव स्तर के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का संचार कौशल बढ़ेगा और वे बाल संरक्षण मुद्दों पर बेहतर सहभागिता कर सकेंगे।
- वे बाल संरक्षण के प्रमुख मुद्दों पर कार्य योजना बनाने में सक्षम होंगे।

इस मॉड्यूल की मदद से, ग्राम–स्तरीय पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं (जैसे स्थायी समिति के सदस्य, स्वयं–सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, अन्य भागीदार) को अपने समुदायों में बच्चों के लिए एक सुरक्षात्मक वातावरण बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान किया जाएगा।

इस मॉड्यूल की गतिविधियाँ बाल संरक्षण गतिविधियों को बढ़ाने और सभी बच्चों के लिए एक सुरक्षित तथा स्वस्थ परिवेश को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

इस मॉड्यूल का उपयोग कैसे करें?

इस मॉड्यूल के सत्र/गतिविधियाँ यह मानकर विकसित की गई हैं कि प्रशिक्षक पहले से ही बाल संरक्षण प्रक्रियाओं के बारे में उचित समझ रखते हैं। यह सिफारिश की जाती है कि प्रशिक्षकों को बाल संरक्षण की बारीकियों की गहरी समझ सुनिश्चित करने के लिए बाल संरक्षण स्मार्ट किट का अध्ययन करना चाहिए। यह पृष्ठभूमि उन्हें प्रासंगिक उदाहरणों को उनके प्रशिक्षण में सहजता से एकीकृत करने के लिए तैयार करेगी, जिससे प्रतिभागियों को वास्तविक दुनिया के परिदृश्य मिलेंगे जो समझ और क्रियान्वयन को बढ़ाएंगे।

सत्रों को गतिविधियों के रूप में प्रस्तुत करके, उन्हें बाल संरक्षण के संदर्भ में स्थापित करके एक प्रासंगिक और दिलचस्प तरीके से तैयार किया गया है। इस मॉड्यूल के सत्रों को समुदाय स्तर पर उपलब्ध मौजूदा प्लेटफार्मों जैसे पीआरआई बैठकें, वीएचएसएनडी, ग्राम सभा बैठकें, किशोर/युवा समूह बैठकें/*बालिका मंच* बैठकें, एसएचजी बैठकें आदि का उपयोग करके क्रियान्वित किया जा सकता है। प्रत्येक सत्र की अवधि 45 से 60 मिनट है और इनमें उन सामग्रियों का उपयोग होगा जो गांव में आसानी से उपलब्ध होती हैं।

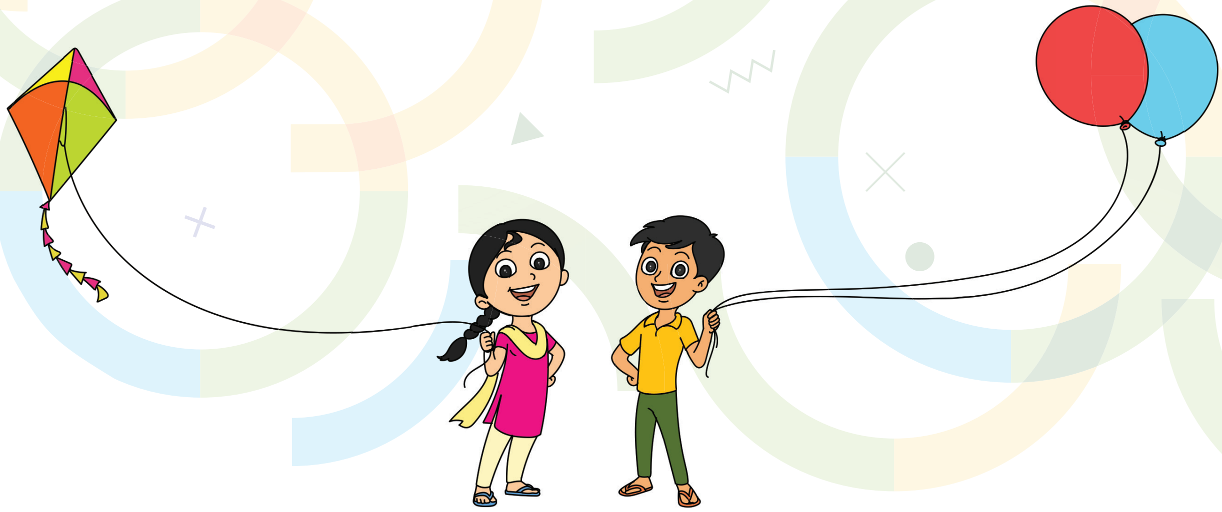

सत्र 1

इच्छाओं और आवश्यकताओं के माध्यम से बाल अधिकारों को समझना

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को बाल अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करेगा।

आवश्यक सामग्री

नोट बुक, पेन, पिन, चित्र चिपकाने के लिए बोर्ड, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पुस्तिका से ली गई तस्वीरें, सीपी स्मार्ट किट से बाल संरक्षण (सीपी) मॉड्यूल 1 ए इच्छा और आवश्यकता के 4–6 कार्ड सेट्स, मार्कर पेन

अवधि

60 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- प्रतिभागियों से पूछें कि वे किसे बच्चा कहेंगे?
- बच्चे और बचपन को परिभाषित करने के लिए कहें?

गतिविधिः इच्छा, आवश्यकता और अधिकार के माध्यम से बाल अधिकार को समझना

- सभी प्रतिभागियों को चार समूहों में बांट दें और उनसे कहें कि वे मान लें कि वे फिर से बच्चे हो गए हैं। भूमिका में आने के लिए उन्हें आधे मिनट का समय दें।
- विभिन्न इच्छाओं और आवश्यकताओं वाले कार्डों का एक–एक सेट सभी समूहों को दें। इन सेटों में 20 इच्छाएं और आवश्यकताएं शामिल हैं, इसके अतिरिक्त 4 खाली खाने हैं। प्रतिभागियों से कहें कि एक बच्चे के रूप में अपनी इच्छाएं और आवश्यकताएं जोड़ें। जब सभी समूह यह कार्य कर लें तो प्रतिभागियों की सराहना करें।
- अब प्रतिभागियों से कहें कि मान लें उनका परिवार आर्थिक संकट से गुजर रहा है इसलिए उन्हें अपनी सूची में कमी लानी होगी और 24 की जगह केवल 16 इच्छाओं और आवश्यकताओं को रखना होगा। समूहों को इसके लिए 5 मिनट का समय दें क्योंकि वे आपस में चर्चा करके संख्या को घटाना चाहेंगे। उन्हें एक पेपरशीट पर लिखने के लिए कहें। उन्हें यह भी बताएं कि जिन 16 इच्छाओं आवश्यकताओं की सूची वे बना रहे हैं उसमें समूह के सभी सदस्यों की सहमति होनी चाहिए। जब सभी समूह यह कार्य कर लें तो उनकी सराहना करें।
- अब प्रतिभागियों को बताएं कि आर्थिक संकट के साथ–साथ घर के एक सदस्य पर स्वास्थ्य सम्बन्धी गंभीर समस्या आने के कारण उन्हें पुनः अपनी सूची 16 से घटाकर 8 पर लानी होगी ताकि खर्चों में और कटौती हो सके। इस कार्य के लिए उन्हें 3 मिनट का और समय दें।

- समूहों से कहें कि बड़े समूह में वे यह बताएं कि सूची को छोटा करने में अपने समूह में उन्होंने सबकी सहमति कैसे बनाई। समूहों को अपनी सूची दिखाने के लिए कहें और समूहों की सूची में समान आवश्यकताओं पर बल दें।

स्पष्टीकरणः प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करें कि पहली बार उन्होंने जो इच्छाओं/आवश्यकताओं को हटाया वे सबसे कम महत्वपूर्ण थीं। अंत में जो उनकी सूची में बच गईं वह सबसे जरूरी इच्छाएं और आवश्यकताएं हैं, जो सभी बच्चों के लिए लगभग बराबर महत्व की हैं तथा उन्हें आपातकालीन स्थिति में भी नहीं हटाया जा सकता।

निम्नानुसार सारांश प्रस्तुत करेंः

अलग–अलग लोगों की अलग–अलग इच्छाएं तथा आवश्यकताएं हो सकती हैं किंतु अधिकार वह आवश्यकताएं हैं जो सबके लिए समान रूप से जरूरी हैं।

सभी बच्चों के अधिकार हैं, इससे कोई मतलब नहीं है कि वे किस राज्य/क्षेत्र से हैं, कितनी उम्र के हैं, लड़की हैं या लड़का हैं, विकलांग हैं या नहीं–सबके समान अधिकार हैं।

सभी इच्छाएं आवश्यकता नहीं हैं किंतु कुछ निश्चय ही हैं जैसे जीवन के लिए आवश्यक चीज़ें उदाहरण के लिए–भोजन, स्वास्थ्य देखभाल, आवास आदि।

बाल अधिकारों की रक्षा करने की जिम्मेदारी सरकार की है। सरकार का यह दायित्व है कि सभी बच्चों को उनका अधिकार प्राप्त हो।

जो चीज़ें इच्छाएं हैं किंतु आवश्यकता नहीं हैं वह हैं जिनकी इच्छा तो है किंतु जीवन के लिए जरूरी नहीं है जैसे– खिलौने, फास्ट फूड या गैजेट्स।

अधिकार कानूनी हक़ है जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होते हैं।

किसी भी स्थिति में अधिकारों से समझौता नहीं किया जा सकता। अधिकारों की मुख्य बात यह है कि उन्हें विभाजित नहीं किया जा सकता। एक अधिकार दूसरे को हटाकर लागू नहीं किया जा सकता और हर अधिकार एक समान महत्वपूर्ण है। कोई यह नहीं कह सकते कि अगर बच्चे को जीवित रहने का अधिकार है तो संरक्षण के अधिकार की जरूरत नहीं है।

जब परिवार अपने बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा नहीं कर पाते, तब सरकार को बच्चों के मूलभूत अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए आगे आना पड़ता है।

अब प्रतिभागियों से पूछें कि 3 सबसे अधिक महत्वपूर्ण इच्छाएं और आवश्कताएं (संभवतः अधिकारों) जिनके साथ समझौता नहीं किया जा सकता, को क्या चार समूहों में विभाजित किया जा सकता है जैसे– आहार, स्वास्थ्य देखरेख और आवास, जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं, इसी तरह खेल का मैदान और शिक्षा,

विकास के लिए जरूरी है। प्रतिभागियों को निम्न शीर्षकों के अंतर्गत अधिकारों को सूचीबद्ध करने में मदद करें:

जीवित	विकास	संरक्षण	भागीदारी

इस तरह के श्रेणीकरण से यह पता चलेगा कि कभी–कभी किसी अधिकार को एक श्रेणी में रखना मुश्किल होगा, क्योंकि वह अधिकार एक से अधिक श्रेणियों को पूरा करने में मददगार है, उदाहरण के लिए एक अच्छे आवास को जीवित रहने तथा संरक्षण देने दोनों श्रेणियों में रखा जा सकता है क्योंकि आवास विहीन बच्चों के साथ शोषण और दुर्व्यवहार अधिक होता है, आवासीय सुविधा न होने से बच्चों को बीमार होने का ही जोखिम नहीं होता बल्कि उनके साथ दुर्व्यवहार तथा शोषण होने का जोखिम भी अधिक होता है।

सीख का सार

अलग-अलग लोगों की इच्छाएं और जरूरतें अलग-अलग होती हैं, लेकिन अधिकार बुनियादी जरूरतें हैं जो सभी के लिए समान हैं।

हर बच्चे के पास अधिकार हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे किस क्षेत्र/राज्य से हैं, किस समुदाय या धर्म से हैं, उनकी उम्र कितनी है, वे लड़का हैं या लड़की, दिव्यांग हैं या नहीं - सभी के अधिकार समान हैं।

किसी भी स्थिति में अधिकारों से समझौता नहीं किया जा सकता। अधिकारों का मुख्य पहलू यह है कि वे अविभाज्य हैं। एक अधिकार दूसरे अधिकार की जगह नहीं ले सकता और सभी अधिकार समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। कोई यह नहीं कह सकता कि यदि किसी बच्चे को जीवित रहने का अधिकार है, तो सुरक्षा का अधिकार महत्वपूर्ण नहीं है।

सभी इच्छाएं जरूरतें नहीं होतीं। लेकिन कुछ निश्चित रूप से हैं, जैसे - जीवित रहने के लिए आवश्यक चीज़ें, जैसे कि भोजन, स्वास्थ्य देखभाल, आश्रय।

वे चीज़ें जो इच्छा तो हैं लेकिन जरूरत नहीं, वे चीज़ें हैं जो वांछनीय तो हैं लेकिन जीवित रहने के लिए आवश्यक नहीं हैं जैसे खिलौने, फास्ट फूड या गैजेट।

सीख पर विचार करें

परिवार के अन्य सदस्यों के साथ भी यही गतिविधि संचालित करें और देखें कि क्या सूची का विस्तार करने की आवश्यकता है।

अपने घर या समुदाय के बच्चों के साथ अपनी सूची में मौजूद चीज़ों पर चर्चा करें और उन्हें बाल अधिकारों की अवधारणा को समझने में मदद करें।

सत्र 2

बाल संरक्षण को समझना

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि बाल संरक्षण क्या है।

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

आवश्यक सामग्री

एक डोरी से बंधे गुब्बारे (लगभग 10–15)

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या आपको लगता है कि बच्चों को सुरक्षा की जरूरत है? क्यों?

अवधि

60 मिनट

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों के साथ उन अतिरिक्त चीज़ों पर संक्षेप में चर्चा करें जो उन्होंने इच्छाओं और आवश्यकताओं के तहत जोड़ी हैं। क्या आप बच्चों को बाल अधिकारों की अवधारणा समझाने में सक्षम हुए?

गतिविधि

- प्रतिभागियों को चार समूहों में विभाजित करें। पहले समूह के सदस्यों को प्रशिक्षण कक्ष से बाहर ले जाएं। इसे ग्रुप 1 का नाम दिया जाएगा। उन्हें गुब्बारे वितरित करें और उन्हें गुब्बारे पकड़ने और उनके धागों को अपनी कलाई, टखनों या अपने शरीर के किसी भी हिस्से पर कसकर बांधने का निर्देश दें। उन्हें और कुछ नहीं बताएं।
- जब यह समूह गुब्बारे बांधने में व्यस्त हो तो दूसरे समूह को समूह एक से थोड़ी दूरी पर ले जाएं, ताकि वे बातचीत न सुन सकें। इसे ग्रुप 2 का नाम दिया जाएगा। उन्हें निर्देश दें कि उनकी भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि हॉल में कुछ प्रतिभागियों (4–5) के हाथ में बंधे गुब्बारे सुरक्षित रहें और कोई उन्हें तोड़ न सके। उन्हें यह भी निर्देश दें कि वे बिल्कुल भी बातचीत न करें।
- दो या तीन लोगों का एक तीसरा समूह बनायें। उन्हें बताएं की उनका काम अन्य ग्रुप के सदस्यों से मिलना– जुलना है तथा अवसर मिलते ही गुब्बारों को फोड़ना है।
- शेष प्रतिभागियों को गतिविधि का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने के लिए कहा गया है। सुनिश्चित करें कि समूह केवल वही जानते हैं जो उन्हें बताया गया है और अन्य समूहों को दिए गए किसी भी निर्देश के बारे में कुछ नहीं।
- सभी को कमरे में फिर से प्रवेश करने के लिए कहें।
- समूहों को अपना स्थान लेने और गतिविधि शुरू करने का निर्देश दें।
- गतिविधि एक से दो मिनट के भीतर समाप्त हो जाती है। आमतौर पर, अधिकांश या सभी गुब्बारों को फोड़ने के लिए 1 मिनट पर्याप्त होता है।

सुगमकर्ता द्वारा डीब्रीफिंग/चर्चा

- सभी प्रतिभागियों को एक घेरे में बैठाएं।
- गुब्बारे वाले समूह 1 से पूछें – गतिविधि के दौरान उन्हें कैसा महसूस हुआ। विशिष्ट टिप्पणियाँ हो सकती हैं – पता नहीं क्या चल रहा था, डरा हुआ, हमला किया, निराश, किसी मजबूत व्यक्ति से मदद मांगी, मेरे बगल में खड़े व्यक्ति पर भरोसा नहीं था, आदि।
- समूह 2 के सदस्यों से पूछें – आपको कैसा लगा? विशिष्ट टिप्पणियाँ हो सकती हैं – निराश क्योंकि मुझे नहीं पता था कि गतिविधि क्या थी, तैयारी के लिए समय नहीं था, व्यक्ति की अच्छी तरह से रक्षा नहीं कर सका क्योंकि हमलावरों के पास एक योजना थी, मैंने सोचा कि मैं शुरुआत में रक्षा कर सकता हूं, फिर कोई मौका नहीं मिला, मजबूर, वास्तव में नहीं पता था कि क्या करना है।
- समूह 3 से पूछें – आपको कैसा लगा? विशिष्ट टिप्पणियाँ हो सकती हैं – बढ़िया, गुब्बारे फोड़ना आसान, वे अधिक नियंत्रण में थे।

- शेष प्रतिभागियों से पूछें – आपको कैसा लगा? विशिष्ट टिप्पणियाँ हो सकती हैं – कुछ करना चाहते थे लेकिन नहीं जानते थे कि क्या कर सकते हैं, मजबूर महसूस किया, मनोरंजन किया।

स्पष्टीकरण

- चारों समूह वास्तव में किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? प्रतिभागियों से पूछें कि क्या वे अनुमान लगा सकते हैं कि प्रत्येक समूह क्या दर्शाता है। फिर उनके साथ निम्नलिखित साझा करें:
  - समूह 1 उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें सुरक्षा की आवश्यकता है।
  - समूह 2 उन वयस्कों (adults) का प्रतिनिधित्व करता है जो बच्चों की सुरक्षा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं।
  - समूह 3 उन वयस्कों (adults) का प्रतिनिधित्व करता है जो बाल अधिकारों के प्रति कोई सम्मान नहीं रखते हैं और इसलिए विभिन्न तरीकों से बच्चों का शोषण करते हैं, या जो अज्ञानता के कारण बच्चों को अधिक
    असुरक्षित होने देते हैं। समूह 3 नकारात्मक कार्यों का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है जो बच्चों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
  - शेष प्रतिभागी उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो केवल देखते हैं और कुछ नहीं करते। हो सकता है वे कुछ करना चाहते हों लेकिन नहीं जानते हों कि क्या करें। या हो सकता है कि उन्हें यह न लगे कि कुछ बहुत गलत है।
  - प्रतिभागियों से पूछें कि समूह 3 द्वारा गुब्बारों को फूटने से रोकने के लिए क्या आवश्यक था।

सीख का सार

बच्चों को यह जानना जरूरी है कि क्या हो रहा है। कुछ बच्चे विरोध करने में सक्षम होते हैं लेकिन अन्य अधिक असुरक्षित हैं। कभी-कभी बच्चे मिलकर टीम बनाते हैं और एक-दूसरे की रक्षा करते हैं। सभी को अपनी सुरक्षा के लिए कुछ कौशल की आवश्यकता होती है लेकिन वे सुरक्षा के लिए जिम्मेदार नहीं होते हैं।

संरक्षक के रूप में वयस्कों (adult) को यह जानने की जरूरत है कि क्या हो रहा था। उन्हें केवल व्यक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि एक समूह के रूप में एकजुट करने और रक्षा करने की आवश्यकता है। उन्हें उन लोगों की रणनीति जानने की जरूरत है जो जानबूझकर बच्चों का शोषण करते हैं या उन्हें यह जानने की जरूरत है कि बच्चे कैसे अधिक असुरक्षित हो जाते हैं।

दुर्व्यवहार करने वालों को यह जानना होगा कि उनका व्यवहार स्वीकार्य नहीं है।

अनजान लोगों और देखने वालों को यह जानने की जरूरत है कि कैसे उनके कार्य बच्चों को अधिक असुरक्षित बनाते हैं। उन्हें सुरक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए न कि केवल निरीक्षण करना चाहिए। यह जानने की आवश्यकता है कि सुरक्षा समस्याओं को कैसे पहचाना जाए और उन्हें कब और कैसे प्रतिक्रिया दी जाए।

सीख पर विचार करें

उन बच्चों की पहचान करने के विभिन्न तरीकों के बारे में सोचने का प्रयास करें जिन्हें देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता हो सकती है।

पॉकेट बुक- *किशोरों से बात करना: 'आंगनवाड़ी कार्यकर्ता कोविड-19 के दौरान बाल संरक्षण के मुद्दों पर बच्चों की कैसे मदद कर सकती हैं'* में उल्लेखित विभिन्न बाल संरक्षण मुद्दों वाले पृष्ठों के कट-आउट साझा करें और उनसे पूछें कि प्रत्येक मुद्दे के मामले में वे कैसे प्रतिक्रिया देंगे।

संदर्भ

किशोरों से बात करना: आंगनवाड़ी कार्यकर्ता कैसे कोविड–19 के दौरान बाल संरक्षण के मुद्दों पर बच्चों की मदद कर सकती हैं। https://drive.google.com/file/d/1jdr0pwXZri25MDSKf2rJKpREU63Gj9Qz/view?usp=sharing

बाल संरक्षण मॉड्यूल 1: बच्चों के अधिकार और संरक्षण कानूनों का परिचय: https://drive.google.com/file/d/1HNzmmYWKotO77rRUtHWiRP8lpGtwrFxD/view?usp=sharing

सत्र से पहले याद रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बातें:

- बाल संरक्षण शब्द का तात्पर्य बच्चों के खिलाफ हिंसा, उपेक्षा, शोषण और दुर्व्यवहार को रोकने तथा प्रतिक्रिया देने से है – जिसमें यौन शोषण, तस्करी, बाल श्रम और महिला जननांग विकृति/काटने और बाल विवाह जैसी हानिकारक पारंपरिक प्रथाएं शामिल हैं।
- बाल संरक्षण कार्यक्रम उन बच्चों पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं जो इन दुर्व्यवहारों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, जैसे– माता–पिता की देखभाल के बिना रहना, दिव्यांगता के साथ रहना, जब वे किसी अपराध के दोषी हों, सशस्त्र संघर्ष में, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, महामारी आदि। आइए इन श्रेणियों को अधिक विस्तार से समझें:

देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता वाले बच्चे (सीएनसीपी)

- बेघर/सड़कों पर रहने वाले
- गुमशुदा बच्चे
- वे बच्चे जिनका जीवन खतरे में है
- प्राकृतिक आपदाओं के शिकार
- दिव्यांग बच्चे
- भीख मांगने वाले बच्चे
- तस्करी के शिकार
- अनाथ और छोड़े हुए बच्चे
- जिनकी देखभाल माता–पिता नहीं कर सकते
- कुपोषित बच्चे
- मादक द्रव्यों के सेवन में लिप्त बच्चे
- बाल विवाह के शिकार
- मानसिक रूप से अस्थिर बच्चे
- यौन शोषण के शिकार
- एचआईवी/कुष्ठ रोग से प्रभावित
- भेदभाव के शिकार
- बाल श्रम के शिकार

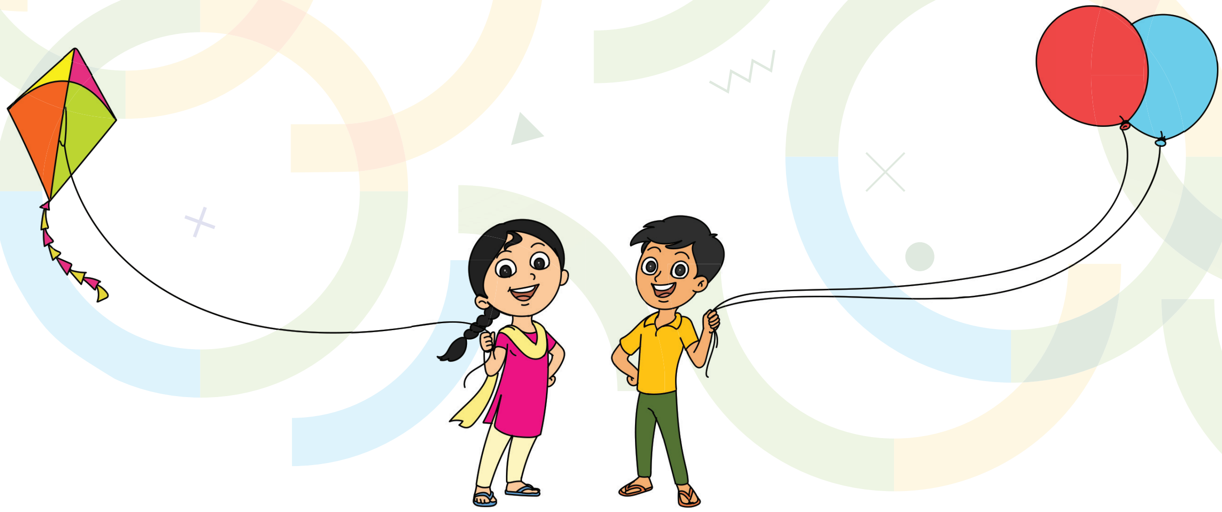

सत्र 3

बाल अनुकूल संचार का महत्व

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि बच्चों के साथ संवाद करना वयस्कों (adult) की तुलना में अलग है। सत्र बच्चों के लिए स्वतंत्र और खुले तौर पर संवाद करने के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण बनाने के महत्व पर भी प्रकाश डालेगा।

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

आवश्यक सामग्री

पेपर की शीट, पेन

अवधि

60 मिनट

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या बच्चों के साथ संवाद करना वयस्कों (adult) के साथ संवाद करने से अलग है?
- बच्चों को खुल के संवाद करने में मदद करने के लिए वयस्क (adult) क्या कर सकते हैं?

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से उन संभावित बाल संरक्षण मुद्दों के बारे में पूछें जिनका समुदाय में सामना करना पड़ सकता है। प्रतिभागियों को यह साझा करने की अनुमति दें कि वे पॉकेट बुक में हाइलाइट किए गए विभिन्न बाल संरक्षण मुद्दों पर कैसे प्रतिक्रिया देंगे।

गतिविधि – क्या श्वेता खुलकर बात करेगी?

- सुगमकर्ता समूह से चार वॉलंटियर को दो जोड़ियों में विभाजित करेगा और रोल प्ले के लिए निम्नलिखित दृश्य दिए जाएंगे।
- जोड़ी 1 का दृश्य

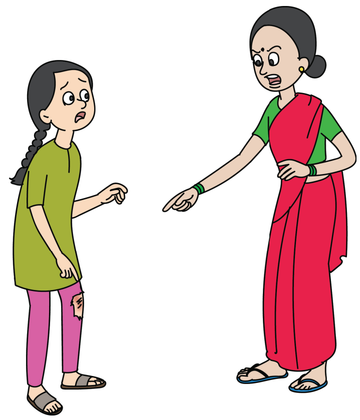

  - जोड़ी का एक सदस्य माँ/पिता की भूमिका निभाता है तथा दूसरा बच्चे (श्वेता) की भूमिका निभाता है।
  - श्वेता घुटने की चोट के साथ घर आई है और बहुत उदास और डरी हुई लग रही है।
  - जैसे ही वह अपने घर में प्रवेश करती है, माता–पिता चोट को देखते हैं और चिल्लाते हैं "यह कैसे हुआ, तुमने ही कुछ किया होगा।"
  - श्वेता डरी रहती है और माता–पिता को बताती है कि वह सीढ़ियों से गिर गई है। तब माँ उसे डांटती है "तुम्हें सावधान रहना चाहिए" और घाव को साफ करती है।
  - माँ फिर से श्वेता को गुस्से में कहती है "भविष्य में सावधान रहना"।

- जोड़ी 2 का दृश्य
  - जोड़ी का एक सदस्य माता/पिता की भूमिका निभाता है और दूसरा श्वेता की भूमिका निभाता है।
  - श्वेता घुटने की चोट के साथ घर आई है और बहुत उदास और डरी हुई लग रही है।
  - जैसे ही वह घर में प्रवेश करती है, माता–पिता चोट को देखते हैं और विनम्रता से उसे बैठने के लिए कहते हैं और चोट की जांच करते हैं।
  - माँ श्वेता से पूछती है कि "क्या वह ठीक है।" वह जवाब देती है, "हाँ लेकिन चोट में थोड़ा दर्द हो रहा है।" फिर माँ घाव को साफ करती है और चोट पर मरहम लगाती है।
  - माँ फिर श्वेता को पानी देती है और दोबारा पूछती है "क्या तुम ठीक हो?" और फिर प्यार से पूछती है "क्या हुआ?"
  - श्वेता झिझकती है लेकिन माँ आश्वासन देती है कि यह ठीक है, और वह ईमानदारी से बता सकती है। फिर श्वेता माता–पिता को बताती है कि एक बड़ी लड़की ने उसे धक्का दिया और तब उसे चोट लग गई। फिर माँ उससे पूछती है कि "बड़ी लड़की कौन थी और उसने ऐसा क्यों किया?" इसके बाद श्वेता पूरी घटना खुलकर बताती है।

निम्नलिखित पर चर्चा करें

- गतिविधि के अंत में, प्रतिभागियों से पूछें कि दृश्य 1 में क्या हुआ था:
  - पूछें: क्या माता–पिता ने श्वेता की बात सुनी?
  - पूछें: माता–पिता ने श्वेता से कैसे बात की? इसका श्वेता पर क्या असर हुआ?
- प्रतिभागियों से दृश्य 2 के बारे में भी पूछें कि क्या हुआ था:
  - पूछें: क्या माता–पिता ने श्वेता की बात सुनी?
  - पूछें: माता–पिता ने श्वेता से कैसे बात की और उसके साथ कैसा व्यवहार किया? इसका श्वेता पर क्या असर हुआ?

- इस बात पर प्रकाश डालें कि जब हम बच्चों से गुस्से में बात करते हैं तो वे डर जाते हैं। वयस्कों (adult) के पास अधिकार और शक्ति होती है और बच्चे अक्सर उनसे डरते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम बच्चों से बिना धमकी भरे तरीके से बात करें। इससे उन्हें हमसे खुलकर बात करने में मदद मिलेगी।
- दृश्य 1 में माता–पिता ने श्वेता की बात नहीं सुनी और उससे गुस्से में बात की। परिणामस्वरूप, श्वेता ने अपनी चोट का वास्तविक कारण साझा नहीं किया। इस प्रकार दृश्य 1 बाल अनुकूल संचार को प्रतिबिंबित नहीं करता है।
- दृश्य 2 में, माता–पिता ने श्वेता को शांत किया और उससे विनम्रता और स्नेह से बात की। परिणामस्वरूप, श्वेता खुलकर बात कर पाई और ईमानदारी से साझा कर पाई कि और चोट कैसे लगी। इस प्रकार, दृश्य 2 बच्चों के अनुकूल संचार का प्रतिनिधित्व करता है।

सीख का सार

बच्चों के साथ संवाद करना वयस्कों (adult) की तुलना में अलग होता है। बच्चों के पास वयस्कों (adult) की तरह अधिकार और शक्ति नहीं होती है। इस प्रकार, यदि हम उनसे गुस्से और धमकी भरे अंदाज में बात करते हैं, तो वे डर सकते हैं। परिणामस्वरूप, हो सकता है कि वे हमसे खुल कर बात न करें।

बच्चों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए कुछ सरल सुझाव निम्नलिखित हैं:

उनसे विनम्रता और स्नेहपूर्वक बात करें।

उन्हें बताएं कि वे जो कहना चाहते हैं उसे सुनने के लिए आप वहां मौजूद हैं, इस प्रकार, उन्हें खुलकर बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।

सरल शब्दों का प्रयोग करें।

बच्चों से पूछना कि वे कैसा महसूस कर रहे हैं और यदि वे संकट में हैं तो उन्हें सांत्वना दें।

विशिष्ट कार्यों के लिए बच्चे की प्रशंसा करना, इसी तरह उनके व्यवहार या कार्य की आलोचना करना, न कि उनकी, उदाहरण के लिए ''आप लापरवाह हैं'' कहने के बजाय यह कहना कि ''जब आप अपने कपड़े पूरे फर्श पर छोड़ देते हैं तो मुझे यह पसंद नहीं है।''

अक्सर बच्चे डर या अन्य कारणों से कुछ जानकारी साझा करने में झिझकते हैं। उनसे सही विवरण प्राप्त करने के लिए गैर-धमकी और सहायक तरीके से संकेत देने और जांच करने की आवश्यकता हो सकती है।

ऐसे मामलों में, बच्चों द्वारा साझा की गई जानकारी को केवल ऊपरी तौर पर समझ लेने में लंबे अंतराल में मदद नहीं मिलेगी।

बच्चों के लिए खुद अच्छे उदाहरण बनें। यदि आप नहीं चाहते कि बच्चा कुछ शब्दों का उपयोग करे, तो आपको भी उनका उपयोग नहीं करना चाहिए। अगर आप नहीं चाहते कि बच्चा आपसे बात करते समय फोन की ओर देखे तो आपको भी ऐसा करना चाहिए।

सीख पर विचार करें

आप अपने परिवारों और समुदायों में बच्चों के अनुकूल संचार कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं?

बच्चों से एक दिन सरल, विनम्र और मैत्रीपूर्ण स्वर में और दूसरे दिन गंभीर स्वर में बात करने का प्रयास करें। क्या बच्चों की प्रतिक्रियाओं में कोई अंतर था?

किसी बच्चे के विशिष्ट कार्यों की प्रशंसा और आलोचना करने का प्रयास करें, न कि स्वयं बच्चे की। प्रत्येक मामले में बच्चे के व्यवहार में होने वाले अंतर पर ध्यान दें।

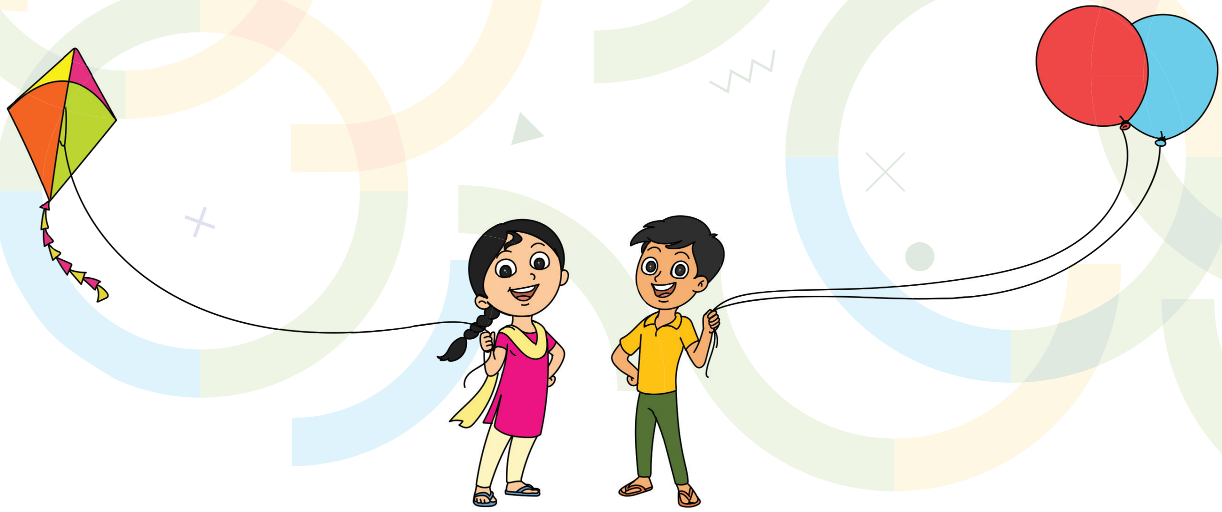

सत्र 4

बच्चों के साथ खुले/निर्बाध संवाद को सुगम बनाना

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि बच्चों के साथ बातचीत करते समय किस प्रकार का संवाद सहायक होगा।

आवश्यक सामग्री

मोटी शीट/गत्ता, स्थानीय रूप से मिलने वाली वस्तुएं– गेंद, कलम, छड़ी, कपड़े का टुकड़ा, बिस्कुट का पैकेट, आदि।

अवधि

60 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- आपके अनुसार संचार का क्या उद्देश्य होता है?
- उन्हें बताएं कि इसे हम बेहतर तरीके से एक गतिविधि के जरिए समझेंगे।

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से पूछें कि बच्चों के साथ संवाद करना वयस्कों (adult) के साथ संवाद करने से किस प्रकार भिन्न है। प्रतिभागियों को अपने बच्चों की आलोचना और प्रशंसा करने तथा उनके व्यवहार में अंतर दर्ज करने के अपने अनुभव साझा करने दें।

गतिविधि: प्रभावी संचार को समझना

इस गतिविधि के लिए हमें चार वॉलंटियर की जरूरत है।

- सुगमकर्ता दो प्रतिभागियों को इच्छानुसार आगे आने के लिए कहेंगे।
- उन्हें प्रशिक्षण कक्ष/क्षेत्र के बीच में लगभग एक मीटर की दूरी रखते हुए एक–दूसरे के सामने बैठने के लिए कहें। प्रत्येक वॉलंटियर को दस वस्तुओं का एक सेट दें, जिसे वे अपने सामने रखेंगे। उन्हें हम वॉलंटियर 1 और वॉलंटियर 2 नाम देंगे।
- अन्य दो वॉलंटियर को मोटी शीट/गत्ता पकड़कर वॉलंटियर 1 और वॉलंटियर 2 के बीच रखने के लिए कहें। शीट इस तरह पकड़ी जानी चाहिए कि दोनों एक दूसरे को न देख सकें।
- समूह को खड़े होकर और गतिविधि का निरीक्षण करने के लिए कहें। दोनों ओर मान लीजिए दस वस्तुओं का एक ही सेट है।
- एक वॉलंटियर प्रशिक्षक की भूमिका निभाएगा, जबकि दूसरा वॉलंटियर प्राप्तकर्ता की भूमिका में होगा। प्रशिक्षक अपने सामने रखी वस्तुओं को एक लाइन से रखेगा और शीट की दूसरी ओर बैठे व्यक्ति को वस्तुओं को उसी क्रम में लगाने का निर्देश देगा।
- प्रशिक्षक की तरफ वस्तुओं को एक विशेष क्रम में लगाया हुआ होना चाहिए।
- परिदृश्य एक में, प्राप्तकर्ता सुनने पर जो समझता है उसके आधार पर वस्तुओं को लगाएगा। (कोई सवाल या कुछ बताए बिना)
- अन्य सभी प्रतिभागियों को शांत रहने और गतिविधि का निरीक्षण करने के लिए अनुरोध किया जाएगा।
- प्राप्तकर्ता जब एक बार वस्तुओं को लगा देते हैं, तो दोनों के बीच से शीट हटा दी जाएगी।
- दोनों प्रशिक्षक और प्राप्तकर्ता पूरी की गई गतिविधि का परिणाम देख सकेंगे।
- अब, उन्हीं वॉलंटियर को बताएं कि यही गतिविधि कुछ बदलावों के साथ दोहराई जाएगी। इस बार वॉलंटियर आपस में बातचीत कर (प्रश्न पूछने और उत्तर देने) सकते हैं। दोनों वॉलंटियर चाहें तो अपनी जगह भी बदल सकते हैं।
- जब निर्देश पूरे हो जाएं, तब वॉलंटियर से दोबारा सही और गलत संख्या बताने के लिए कहें। जवाबों को बोर्ड पर लिखें और बीच में से शीट को हटा दें।

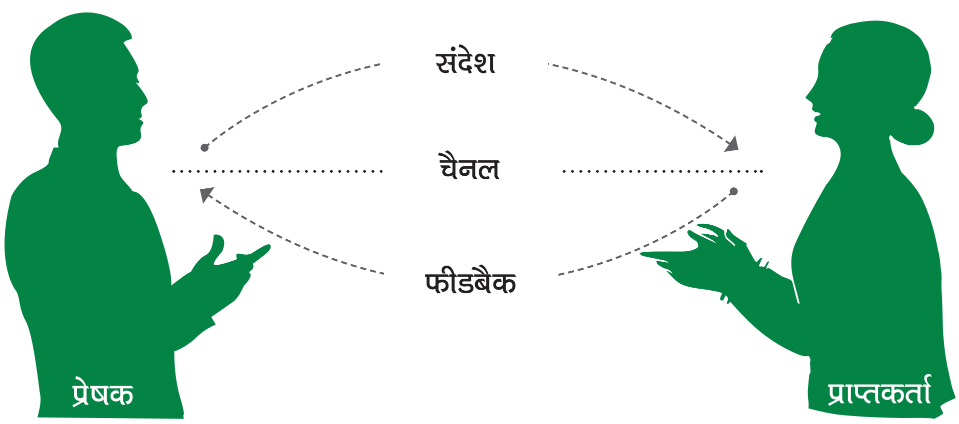

नीचे दिए गए लिंक में वीडियो को प्रतिभागियों के साथ साझा करें और उनसे पूछें कि इन स्थितियों में संचार सफल क्यों नहीं रहा:

https://youtu.be/UW8nEQ4hA3E?si=Fe6BL48UAml_sygz

https://youtube.com/shorts/md2zq2AsbSE?si=Rgo-AcfSVF12yhT-

निम्नलिखित पर चर्चा करें

- संचार में रूकावटें कब आती हैं और उनके कारण क्या हैं? क्या हम बच्चों को कहानी के लिए उनका पक्ष समझाने का समय देते हैं? क्या हम बच्चों के साथ बातचीत करते समय किसी प्रकार का पक्षपात करते हैं?
- बच्चों के साथ बातचीत के दौरान, बच्चों को सहज बनाने के लिए अन्य सहायक सामग्री जैसे चित्र बनाना, कहानी सुनाना, अपने अनुभव साझा करना आदि का उपयोग करना महत्वपूर्ण है।

सीख का सार

प्रेषक की जिम्मेदारी तब तक खत्म नहीं होती जब तक संदेश प्राप्तकर्ता, प्रेषक द्वारा दिए गए संदेश को समझ नहीं लेता। इस प्रकार, यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों के साथ संवाद करते समय, हम यह समझने की कोशिश करें कि बच्चे कुछ क्यों कह रहे हैं और यह आकलन करें कि क्या कुछ जानकारी छूट गई है और क्या बच्चे के साथ बातचीत करने में ज्यादा मदद की जरूरत है।

सीख पर विचार करें

जब आप घर वापस जाएं तो पूरी संचार प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए अपने बच्चों से बात करें और देखें कि बच्चा कैसे प्रतिक्रिया करता है और क्या इससे कोई फर्क पड़ा?

बातचीत के दौरान उनके विचार जानें और उन्हें ऐसा महसूस कराएं कि उनकी बात सुनी जा रही है।

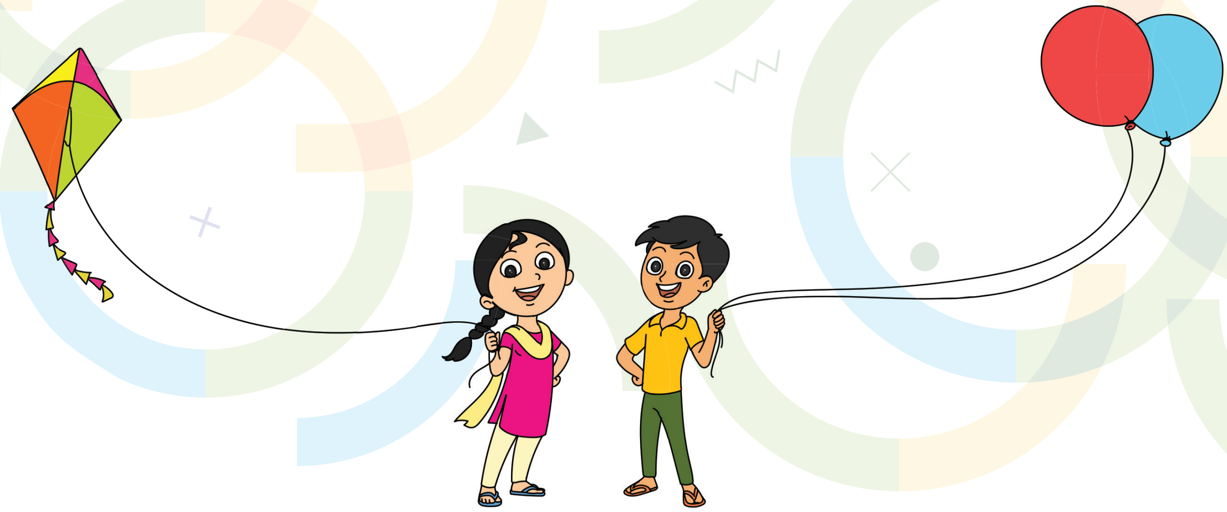

सत्र 5

बच्चों के साथ बातचीत में संचार की बारीकियों को समझना

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह जानने में मदद करेगा कि बच्चों के साथ बातचीत करते समय मौखिक और गैर–मौखिक संचार दोनों कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रतिभागी इस बात की सराहना करने में सक्षम होंगे कि सक्रिय श्रवण और असरदार संचार बच्चों के साथ जुड़ने और संदेशों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने में मदद करता है। वे यह भी समझेंगे कि इस तरह का संचार बच्चों के साथ जुड़ने और दुर्व्यवहार के संकेतों की पहचान करने में मदद करता है।

आवश्यक सामग्री

पेपर की शीट, पेन

अवधि

60 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या बच्चों के हाव–भाव और कभी–कभी खामोशी भी हमें कुछ बताती है?
- क्या ऐसा होता है कि कभी–कभी बच्चे वह नहीं बता पाते जो वे वास्तव में महसूस करते हैं?

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। बच्चों के साथ संवाद करने में सहायता के लिए वयस्क (adult) किन उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं? प्रतिभागियों को बच्चों के साथ खुले संवाद के अभ्यास के अपने अनुभव साझा करने दें।

गतिविधि – मैं तुम्हें देख रहा हूँ

- सुगमकर्ता समूह से चार वॉलंटियर को दो जोड़ियों में विभाजित करेगा और उन्हें रोले प्ले के लिए निम्नलिखित दृश्य दिए जाएंगे:
- जोड़ी 1 का दृश्य

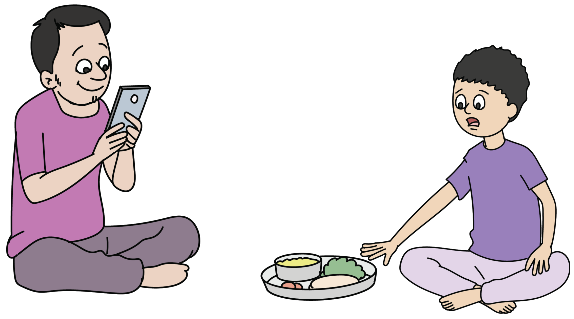

  - एक व्यक्ति खुद को पिता के रूप में पेश करेगा, जो अपने मोबाइल फोन को देख रहा होगा।
  - दूसरा व्यक्ति एक बच्चे के रूप में प्रस्तुत होगा। बच्चा थोड़ा उदास होगा और कहेगा "आज मेरा खाने का मन नहीं है। मैं अन्दर जाकर लेट रहा हूँ।"
  - पिता अभी भी मोबाइल फोन देखते हुए कहेंगे, "ठीक है, खाना ढक दो और सो जाओ। हम बाद में बात करेंगे।"
  - बच्चा पिता को उदास होकर देखेगा, लेकिन पिता मोबाइल चलाते रहेंगे। बच्चा चुपचाप अन्दर चला जायेगा।
- जोड़ी 2 का दृश्य

  - एक व्यक्ति खुद को पिता के रूप में पेश करेगा, जो अपने मोबाइल फोन को देख रहा है।
  - दूसरा व्यक्ति एक बच्चे के रूप में प्रस्तुत होगा। बच्चा थोड़ा उदास है और कहेगा "आज मेरा खाने का मन नहीं है। मैं अन्दर जाकर लेट रहा हूँ।"
  - पिता तुरंत फोन एक तरफ रख देंगे और बच्चे की ओर देखेंगे और कहेंगे, "मुझे तुम उदास दिख रहे हो? क्या बात है?"
  - बच्चा बताता है – "आज मेरा अपने दोस्त से झगड़ा हो गया और हमने एक–दूसरे के साथ मार–पीट की और फिर टीचर ने हम दोनों को सजा दी।"
  - पिता बच्चे से कहते हैं कि "चलो साथ में खाना खाते हैं और फिर तुम मुझे विस्तार से बताओ कि क्या हुआ था।"
  - बच्चा मुस्कुराता है और कहता है कि "हां पिताजी चलो खाना खाते हैं।"

निम्नलिखित पर चर्चा करें

- गतिविधि के अंत में, प्रतिभागियों से पूछें कि दृश्य 1 में क्या हुआ था?
  - पूछें: भले ही पिता बच्चे से बात कर रहे थे, क्या बच्चा ध्यान दे रहा था?
  - क्या माता–पिता ने पूछा कि बच्चा खाना क्यों नहीं चाहता?
- प्रतिभागियों से दृश्य 2 के बारे में भी पूछें कि क्या हुआ था?
  - क्या हुआ जब पिता ने बच्चे की ओर देखा और उससे उसके दिन के बारे में पूछा?
  - इस दृश्य में बच्चे ने अपने पिता से खुलकर बात क्यों की?

- इस बात पर प्रकाश डालें कि जब हम संवाद करते हैं, तो हम न केवल शब्दों द्वारा बात करते हैं, बल्कि अपनी शारीरिक भाषा के माध्यम से भी बात करते हैं, जिसमें हमारे चेहरे के भाव, आंखों का संपर्क, हमारी आवाज का स्वर और हमारी मुद्रा शामिल होती है। इसे गैर–मौखिक संचार कहा जाता है।
- दृश्य 1 में पिता ने बच्चे की ओर नहीं देखा और आँख से आँख नहीं मिलाई। पिता ने बच्चे के चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा पर ध्यान नहीं दिया।

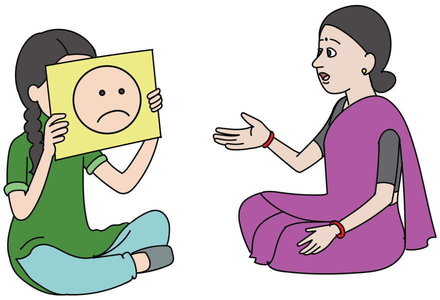

- दृश्य 2 में, पिता ने तुरंत फोन एक तरफ रख दिया और बच्चे पर ध्यान दिया। ध्यान देने के इस छोटे से कार्य ने बच्चे को पिता से खुलकर अपनी बात रखने में मदद की। बच्चे को लगा कि उसकी बात सुनी जाएगी।

सीख का सार

शब्दों के माध्यम से होने वाला संचार मौखिक संचार कहलाता है। संचार का वह अनकहा हिस्सा जो शारीरिक भाषा, आंखों के संपर्क, हमारी आवाज के स्वर और हमारी मुद्रा के माध्यम से होता है, गैर-मौखिक संचार कहलाता है।

हमारे अशाब्दिक संकेत दूसरे व्यक्ति, विशेषकर बच्चों को बताते हैं कि हम उन पर ध्यान दे रहे हैं या नहीं और हम उनकी बात सुन रहे हैं या नहीं। बच्चे उत्सुक पर्यवेक्षक होते हैं और वे अपने परिवेश में दूसरों को देखकर बहुत कुछ सीखते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि परिवार के वयस्क (adult) बच्चे पर ध्यान नहीं देते हैं, तो संभावना है कि बच्चा इस व्यवहार को समझ जाए। हो सकता है कि वह माता-पिता या वयस्कों (adult) से बात करते समय उन पर ध्यान न दे। बच्चा स्वयं को वयस्कों (adult) से दूर कर सकता है।

बच्चों के अशाब्दिक संकेतों का अवलोकन भी हमें उनके बारे में बहुत कुछ बताता है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चा शांत हो जाता है, एकांतप्रिय हो जाता है, उदास या डरा हुआ दिखता है, भूख कम हो जाती है, खेलने के लिए बाहर नहीं जाना चाहता या दोस्तों के साथ समय बिताना नहीं चाहता। ये सभी संकेत हैं कि बच्चा किसी प्रकार की हिंसा, दुर्व्यवहार या उत्पीड़न का सामना कर रहा है।

सीख पर विचार करें

प्रतिभागियों से अपने घरों और समुदाय में बच्चों के साथ बातचीत करते समय ध्यान देने तथा आंखों से संपर्क बनाने जैसे गैर-मौखिक संकेतों का उपयोग करने के लिए कहें।

उन्हें बच्चों में दुर्व्यवहार या असुरक्षा के लक्षण देखने के लिए कहें और यदि वे किसी समस्या का सामना कर रहे हैं तो उनसे बात करें।

अगली गतिविधि शुरू करने से पहले चर्चा करें कि क्या प्रतिभागियों ने देखा कि गैर-मौखिक संकेतों ने बच्चों के साथ उनकी बातचीत को कैसे प्रभावित किया।

बच्चों से बात करते समय परिवार और समुदाय के अन्य वयस्कों (adult) को गैर-मौखिक संचार के महत्व के बारे में सूचित करें।

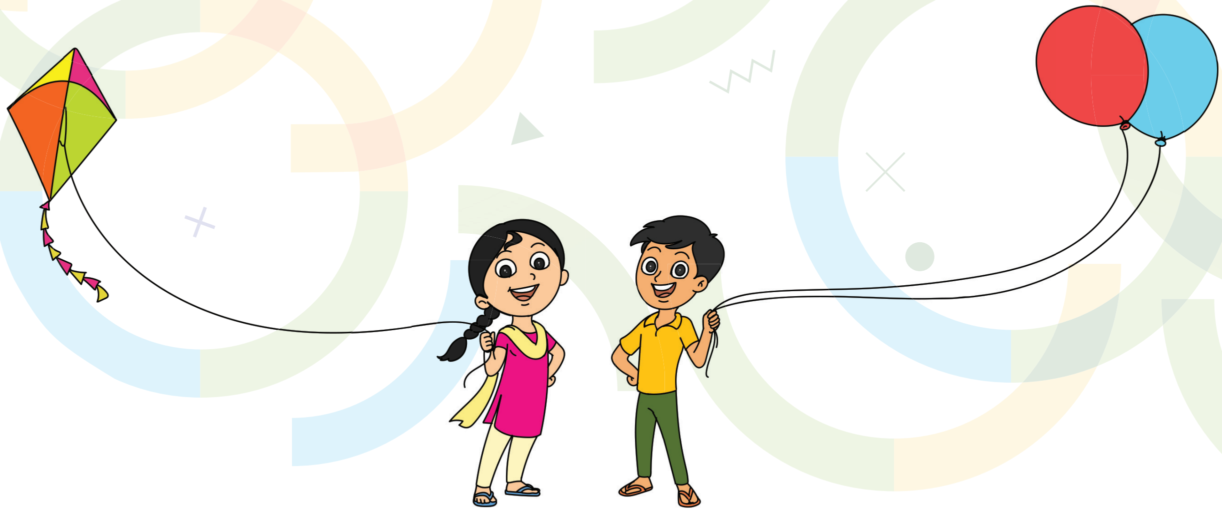

सत्र 6

सकारात्मक पारस्परिक संबंध बनाना

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि गैदर/GATHER दृष्टिकोण का उपयोग करके सकारात्मक पारस्परिक संबंध कैसे बनाएं।

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

आवश्यक सामग्री

पेपर की शीट, पेन

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या आपको लगता है कि व्यवहार परिवर्तन के लिए जानकारी साझा करना पर्याप्त है?
- क्या यह सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता है कि व्यवहार में परिवर्तन हुआ है?

अवधि

60 मिनट

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। कुछ गैर-मौखिक संकेत क्या हैं जिन्हें हमें बच्चों के साथ बातचीत करते समय ध्यान रखना चाहिए? प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि गैर-मौखिक संकेतों ने बच्चों के साथ उनकी बातचीत को कैसे प्रभावित किया।

गतिविधि

1. प्रतिभागियों के साथ GATHER दृष्टिकोण के प्रत्येक घटक के महत्व और उसके अर्थ पर चर्चा करें।

    जी (G) – लाभार्थियों का स्वागत/Greet करें (संबंध स्थापित करें): लोगों से समान रूप से मिलने के लिए पूर्वाग्रहों को दूर करना आवश्यक है। व्यक्तिगत रूप से लोगों का अभिवादन करने से काफी हद तक तालमेल बनाने में मदद मिलती है।

    ए (A)–बच्चे/देखभाल करने वालों से पूछें/Ask (समग्र कल्याण के बारे में जानकारी इकट्ठा करें): बच्चों/देखभाल करने वालों की जरूरतों को जानना महत्वपूर्ण है। ओपन–एंडेड प्रश्न पूछें जैसे– आज आप कैसे हैं? पढ़ाई कैसी चल रही है? आपके घर में सब कैसे हैं?

    टी (T)–बताएं/Tell (जानकारी प्रदान करें)/केवल आवश्यक जानकारी दें और जांचें। प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। विभिन्न विकल्प प्रदान करें और प्रत्येक विकल्प के फायदे और नुकसान पर विचार करें।

    एच (H)–सुने/सहायता करें/Hear/Help: निर्णय लेने या समस्या–समाधान में सहायता करें और ध्यान से सुने। ताकि बाधाओं को दूर किया जा सके और लोग निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।

    ई (E)–व्याख्या/Explain: एक बार जब व्यक्ति कोई विकल्प चुन ले, तो व्यक्ति को महत्वपूर्ण जानकारी याद रखने और किसी भी मिथक या गलतफहमी को दूर करने में मदद करने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) सामग्री का उपयोग करें। इसे कैसे क्रियान्वित करना है और कैसे लागू करना है, इसके बारे में अधिक विवरण दें, जिसमें यह भी शामिल हो कि कहां जाना है, कौन सा समय लागू है।

    आर (R)–रिटर्न/रेफर/दोहराएं/RETURN/REFER/REPEAT: रिटर्न विजिट या रेफरल की योजना बनाई जानी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो दी गई जानकारी को दोहराएँ। हितधारक को आश्वस्त करें कि वह जरूरत पड़ने पर संचारक से संपर्क कर सकते हैं।

2. GATHER दृष्टिकोण के बारे में बात करने के बाद, सभी प्रतिभागियों को नीचे दी गई बलदेव और ललिता की कहानी सुनाएं:

    कहानी:

    बलदेव और ललिता एक छोटे से गाँव में रहते हैं जहाँ एक प्राथमिक विद्यालय है। उनकी बेटी राधा ने पांचवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी कर ली है। लेकिन हाई स्कूल तीन किलोमीटर दूर दूसरे गांव में है. उसके माता–पिता उसे वहां नहीं भेजना चाहते। वे तो चाहते हैं कि वह पढ़ाई बंद कर दे। राधा के पिता अब उसे पास के शहर में अपने परिवार के एक सदस्य के साथ भेजने पर विचार कर रहे हैं जो वहां काम करता है और उन्होंने वहां काम करने के लिए एक अच्छा घर ढूंढने का आश्वासन दिया है। हालाँकि, राधा की माँ सोच रही है कि यह उसकी बेटी के लिए सुरक्षित नहीं है क्योंकि वह बड़ी हो गई है और अपने पति से उसकी शादी कराने पर विचार करने के लिए कहती है।

3. 7–8 वॉलंटियर को इकठ्ठा करें। उन्हें बताएं कि आप दो स्थितियाँ दे रहे हैं। 3–4 प्रतिभागियों का एक समूह पहली स्थिति पर एक रोल प्ले तैयार करेगा और उसका अभिनय करेगा। अगला समूह दूसरी स्थिति पर रोल प्ले का अभिनय करेगा।

स्थिति 1: राधा की शिक्षिका को राधा के बारे में उसकी सहेली रानू से पता चला। वह राधा के घर गई और उसके माता–पिता से इस बारे में बात की।

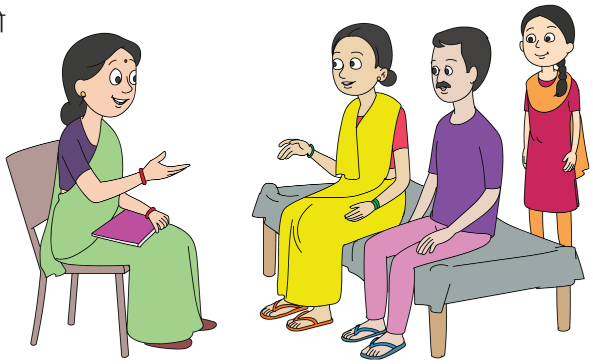

राधा की शिक्षिका उसके घर पहुँची और उसके माता–पिता का अभिवादन किया तथा उनका हालचाल पूछा।

कुछ देर बात करने के बाद राधा के माता–पिता सहज हो गये और उन्हें अच्छा लगने लगा। राधा के पिता ने एक–एक करके शिक्षिका को घर की आर्थिक स्थिति और राधा को स्कूल न भेजने के बारे में बताया। इस वजह से वह चाहता है कि राधा कुछ दिन काम करे, ताकि उसे कुछ आमदनी हो सके और फिर जल्द से जल्द उसकी शादी कर दें, ताकि वह इस जिम्मेदारी से मुक्त हो सके।

राधा की शिक्षिका ने उनकी बात बहुत ध्यान से सुनी और राधा की पढ़ाई जारी रखने के फायदे बताए। उसने राधा के माता–पिता से कहा कि वह एक बुद्धिमान और मेहनती लड़की है और वह सबसे अच्छे छात्रों में से एक है।

राधा की शिक्षिका ने एक छात्रवृत्ति योजना के बारे में बात की और इसका प्रारूप दिखाया एवं इसके लाभ बताए, जिसकी मदद से राधा अपनी पढ़ाई जारी रख सकती है। इस तरह राधा के परिवार पर उसकी शिक्षा के लिए कोई अतिरिक्त आर्थिक बोझ नहीं पड़ेगा। राधा की शिक्षिका ने उन्हें ग्राम प्रधान से बात करने के लिए कहा क्योंकि उन्हें पता था कि पंचायत की एक योजना के तहत राधा को एक साइकिल भी मिल सकती है ताकि वह अन्य लड़कियों के साथ स्कूल जा सके। उन्होंने समझाया कि राधा अभी बच्ची है और इस उम्र में उसकी शादी करना ठीक नहीं है। लंबी चर्चा के बाद, राधा के माता–पिता उसका छात्रवृत्ति आवेदन फॉर्म भरने के लिए सहमत हो गए।

राधा की शिक्षिका ने राधा और उसके परिवार को अगले सोमवार को स्कूल आने के लिए कहा, ताकि राधा का छात्रवृत्ति आवेदन फॉर्म भरा जा सके। शिक्षिका ने राधा को अपना आधार कार्ड, रिपोर्ट कार्ड और अपने माता–पिता के महत्वपूर्ण दस्तावेज साथ लाने के लिए कहा और अपना फोन नंबर भी दिया, ताकि राधा के परिवार को कोई समस्या होने पर उससे बात कर सकें।

स्थिति 2: राधा की शिक्षिका को राधा के बारे में उसकी सहेली रानू से पता चला। वह राधा के घर गई और उसके माता–पिता से इस बारे में बात की।

राधा की शिक्षिका उसके घर पहुंची और माता–पिता का अभिवादन किए बिना ही पास में पड़ी खाट पर बैठ गई। राधा के पिता ने उनका स्वागत किया और राधा की माँ से उनके लिए पानी लाने को कहा।

पानी पीने के बाद राधा की शिक्षिका ने गुस्से में राधा के माता–पिता से उसके स्कूल न आने का कारण पूछा।

राधा के माता–पिता को असहजता महसूस हुई और उन्होंने एक–एक करके शिक्षिका को घर की आर्थिक स्थिति और राधा को स्कूल न भेजने के बारे में बताया। उन्होंने साझा किया कि इस वजह से वे चाहते थे कि राधा कुछ दिनों के लिए काम करे ताकि वह कुछ आय अर्जित कर सके और जल्द से जल्द उसकी शादी कर दे ताकि वे इस जिम्मेदारी से मुक्त हो सकें।

राधा की शिक्षिका ने उनकी बात ध्यान से नहीं सुनी और उन्हें टोकते हुए उसे अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए कहा। शिक्षिका ने राधा के माता–पिता से कहा कि नाबालिग बच्चों से काम कराना दंडनीय अपराध है। राधा की शिक्षिका ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें छात्रवृत्ति योजना के बारे में पता है। उन्होंने राधा के पिता से ग्राम प्रधान से मिलने को भी कहा ताकि राधा को साईकिल योजना का लाभ मिल सके।

राधा की शिक्षिका ने राधा के माता–पिता को समझाया कि राधा अभी बच्ची है और इस उम्र में अगर वे उसकी शादी करेंगे तो अच्छा नहीं होगा। वह इसकी शिकायत पुलिस से करेगी।

राधा के माता–पिता बहुत डरे हुए थे लेकिन उन्हें गुस्सा भी आ रहा था। उस समय, वे शिक्षिका से सहमत हुए और राधा से अपना छात्रवृत्ति आवेदन फॉर्म भरने के लिए कहा। शिक्षिका दोबारा मिलने की बात कहकर वहां से चली गईं।

राधा के माता–पिता ने शिक्षिका के डर से उसकी शादी तो नहीं की, लेकिन उससे छात्रवृत्ति का आवेदन फॉर्म नहीं भरवाया और शहर के एक घर में काम पर भी लगा दिया।

4. अब शेष प्रतिभागियों (जो रोल प्ले में शामिल नहीं थे) से इन दोनों रोल प्ले के बीच अंतर पहचानने के लिए कहें और पूछें कि दोनों स्थितियों में GATHER के किन चरणों को ध्यान में रखा गया था।
5. एकत्रित चरणों को दोहराएँ, प्रतिभागियों की सीख को बोर्ड पर लिखें और सत्र समाप्त करें।

सीख का सार

GATHER दृष्टिकोण एक संचार ढांचा है जो चर्चाओं और बातचीत की प्रभावशीलता में सुधार कर सकता है।

अपनी बातचीत में GATHER दृष्टिकोण को एकीकृत करके, हम आपसी सम्मान, समझ और समर्थन द्वारा गहरे, अधिक सार्थक रिश्ते बना सकते हैं।

इस दृष्टिकोण के प्रमुख घटक हैं:

- संबंध स्थापित करना
- समग्र कल्याण पर जानकारी एकत्र करना
- जानकारी प्रदान करना
- निर्णय लेने में सहायता करना
- मुख्य जानकारी को याद रखने और किसी भी मिथक या गलतफहमी को दूर करने में मदद करना
- वापसी दौरे या रेफरल की योजना बनाना

सीख पर विचार करें

अगली/आगामी एसएमसी (SMC) बैठक के दौरान, प्रिंसिपल/हेडमास्टर को सुझाव दें कि छात्रों को एक विशेष कक्षा/सत्र के माध्यम से यौन अपराधों से बच्चों की रोकथाम (पोक्सो/POCSO) अधिनियम के प्रावधानों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। हो सकता है कि कुछ माता-पिता इस बात से सहमत न हों। उन्हें समझाने के लिए GATHER दृष्टिकोण का उपयोग करें।

संदर्भ

पॉकेट बुक देखें: किशोर–किशोरियों से बातचीत: बाल सुरक्षा के विषय पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बच्चों की सहायता कैसे कर सकती हैं। https://drive.google.com/file/d/1jdr0pwXZri25MDSKf2rJKpREU63Gj9Qz/view?usp=sharing पहचानें कि प्रत्येक परिदृश्य में GATHER दृष्टिकोण कैसे लागू किया जा सकता है।

कृपया यहां बाल संरक्षण मॉड्यूल 1: "बच्चों के अधिकार और संरक्षण कानूनों से परिचय" देखें: https://drive.google.com/file/d/1Y346QlgHScWtL5iWPiOOpw-0hyjn93hX/view?usp=sharing

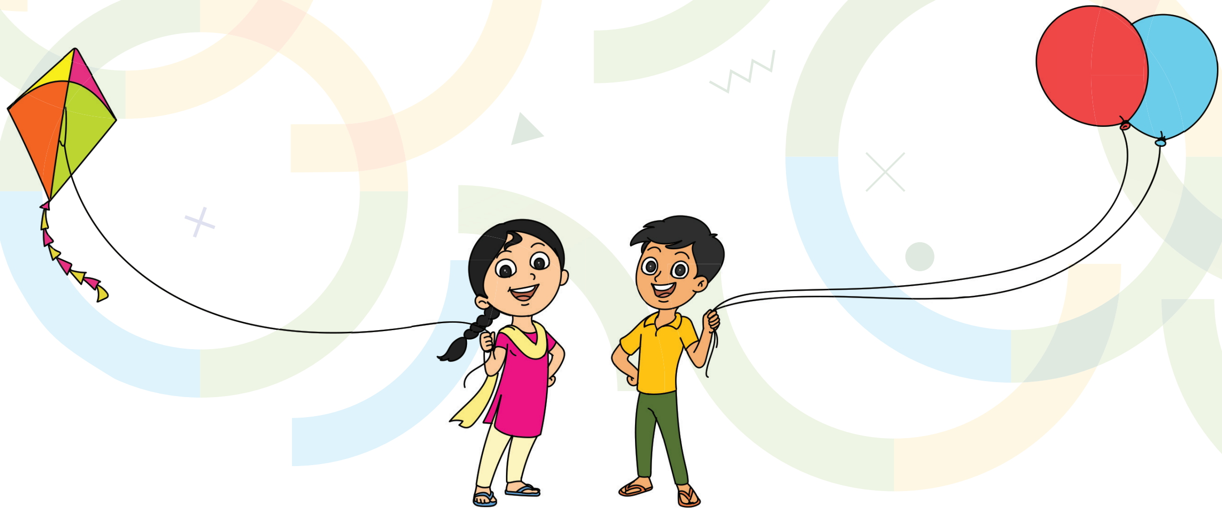

सत्र 7

समूह चर्चा को सहज बनाना

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि समूह चर्चा को कैसे सुगम बनाया जाए, खासकर बाल संरक्षण से जुड़े मुद्दों पर।

आवश्यक सामग्री

पेपर की शीट, पेन

अवधि

60 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- एक–दो लोगों से संवाद करना और एक लोगों के समूह साथ संवाद करने में क्या अंतर है?

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से पूछें कि क्या वे GATHER दृष्टिकोण के प्रमुख घटकों को समझा सकते हैं। प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि क्या वे GATHER दृष्टिकोण के माध्यम से समुदाय के सदस्यों/अन्य अभिभावकों को POCSO अधिनियम पर एक सत्र आयोजित करने के लिए मनाने में सक्षम थे।

गतिविधि

- प्रतिभागियों से कहें कि पिछले सत्र में हमने अंतर्वैयक्तिक संचार के बारे में सीखा। जिसमें 2–3 लोगों के साथ बातचीत करते समय ध्यान रखने योग्य बातों पर चर्चा की गई थी।
- इस सत्र में, 4–8 लोगों के साथ बातचीत करते समय ध्यान रखने योग्य बातों पर चर्चा की जाएगी।
- प्रतिभागियों से पूछें कि वे कौन से लोग हैं जिनसे अक्सर वे समूहों में बातचीत करते हैं? कुछ जवाबों को सुनें और साझा करें कि उन्हें अक्सर प्राथमिक हितधारकों जैसे किशोरों, उनके माता–पिता या विभिन्न प्रकार के गांव या ब्लॉक स्तर के पदाधिकारियों के साथ संवाद करने की आवश्यकता होती है जैसे कि:

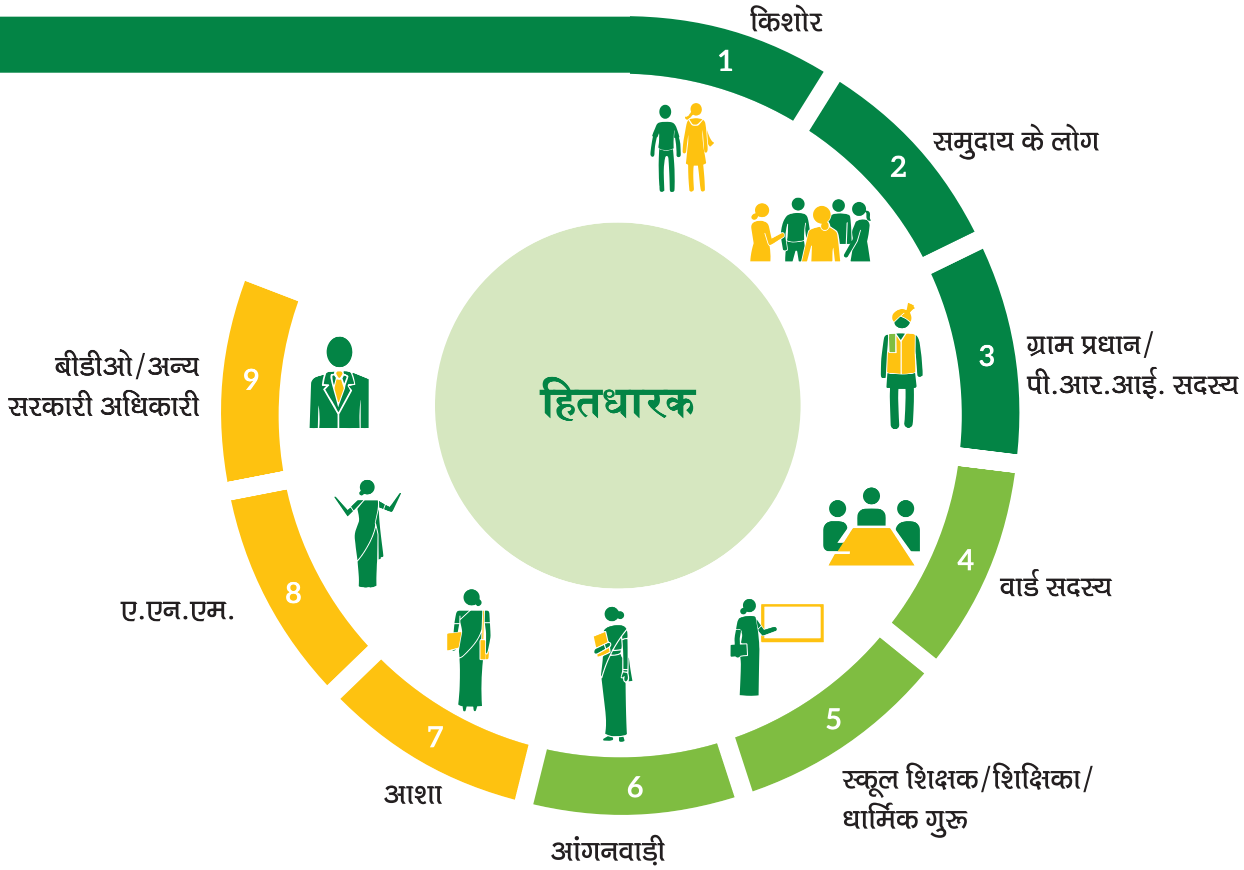

- प्रतिभागियों को निम्नलिखित घटना सुनाएं:

  "एक गांव में एक 14 साल की लड़की थी जिसके माता–पिता दिहाड़ी मजदूर थे। जब उसके माता–पिता काम पर चले जाते थे तो वह घर पर रहती थी और अपने छोटे भाई–बहनों की देखभाल करती थी। एक दिन पड़ोस का एक लड़का उसके पास आया और उसे बताया कि वह शहर में काम करता है और अच्छा पैसा कमाता है। दोनों एक–दूसरे से मिलने लगे और एक दिन खबर आई कि वह उस लड़के के साथ भाग गई है।

  कुछ हफ्ते बाद वह लड़का पास के एक गांव से दूसरी लड़की को ले जाते हुए पकड़ा गया और पता चला कि वह तस्करी (Trafficking) में शामिल था।

- प्रतिभागियों को दो समूहों में बांटें और दोनों समूहों से एक–एक वॉलंटियर को आने के लिए कहें।
- पहले समूह के वॉलंटियर से गांव के किशोरों के एक समूह के साथ समूह संचार सत्र (समूह के सभी सदस्यों के साथ संदेश पहुंचाना) प्रस्तुत करने के लिए कहें, ताकि उन्हें ऐसी स्थितियों से बचने के लिए निवारक कदम उठाने के बारे में जागरूक किया जा सके।
- दूसरे समूह के वॉलंटियर से गांव की स्थायी समिति के सदस्यों के साथ एक समूह संचार सत्र प्रस्तुत करने के लिए कहें जिसमें ग्राम प्रधान, वार्ड सदस्य, स्कूल शिक्षक/शिक्षिका, आशा, एएनएम आदि शामिल हो सकते हैं जिसमें ऐसी स्थितियों को रोकने और निपटने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं पर चर्चा की जाएगी।
- दोनों वॉलंटियर को निर्देश दें कि वे लगभग 10–12 मिनट के समूह संचार सत्र को प्रदर्शित करने के लिए अपने संबंधित समूहों से 4–8 प्रतिभागियों का चुनाव कर सकते हैं। दोनों समूहों को अपनी प्रस्तुति की योजना बनाने के लिए लगभग पांच मिनट का समय दिया जाएगा।
- एक बार जब समूह चर्चा की प्रस्तुति समाप्त हो जाए, तो दोनों वॉलंटियर की सराहना करें और प्रतिभागियों को उनकी सहभागिता के लिए धन्यवाद दें।
- अब निम्नलिखित बिंदुओं के साथ चर्चा शुरू करें:
  - क्या समूहों में कोई समूह सुगमकर्ता था?
  - यदि कोई सुगमकर्ता था, तो उसकी क्या भूमिका थी?
  - क्या समूह के सभी सदस्य सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे?
  - क्या ऐसे कोई सदस्य थे जो या तो बिल्कुल नहीं बोले या बहुत कम बोले? क्यों?
  - क्या ऐसे कोई सदस्य थे जो चर्चा पर हावी हो रहे थे?
  - क्या ऐसे कोई सदस्य थे जो बोलना चाहते थे लेकिन झिझक रहे थे?
  - क्या सुगमकर्ता समूह के केवल मुख्य सदस्यों से बात कर रहा था?
  - क्या समूह के सदस्यों का परिचय कराया गया? क्या उनका स्वागत किया गया? क्या चर्चा के उद्देश्य को बताया गया था?
  - क्या चर्चा किए गए बिंदुओं का सारांश प्रस्तुत किया गया था?
  - चर्चा का उद्देश्य पूरा हुआ था?

सीख का सार

सुगमकर्ता को समूह के सभी सदस्यों को चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, यह सुनिश्चित करना चाहिए।

सुगमकर्ता को निम्न करना चाहिए:

- समूह के सदस्यों का स्वागत करें और उनका परिचय दें
- विषय के बारे में बताना
- सभी की भागीदारी सुनिश्चित करना
- चर्चा को कुछ सदस्यों द्वारा हावी न होने देना
- चुप रहने वाले सदस्यों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना
- अंत में चर्चा का सार बताना और उन्हें धन्यवाद देना

प्रतिभागियों को बताएं कि समूह चर्चा तभी सार्थक होती है जब हर कोई अपने विचार और राय सामने रखता है।

इसी प्रकार, यदि बैठक के दौरान केवल कुछ ही लोग चर्चा पर हावी रहते हैं और बाकी लोग चुप रहते हैं तो जिन्हें बोलने का मौका नहीं मिलेगा, वे अपनी शंकाएं या चिंताएं व्यक्त नहीं कर पाएंगे। इसके परिणामस्वरूप संचार अधूरा और अप्रभावी होगा।

एक प्रभावी समूह चर्चा के लिए सभी प्रतिभागियों की समान भागीदारी और सुगमकर्ता की भूमिका पर जोर देते हुए सत्र का समापन करें।

सीख पर विचार करें

ग्राम प्रधान से मिलें और अपने गांव में बाल विवाह/कम उम्र में विवाह के दुष्प्रभाव के बारे में बताने के लिए एक सामुदायिक बैठक/सत्र की योजना बनाएं।

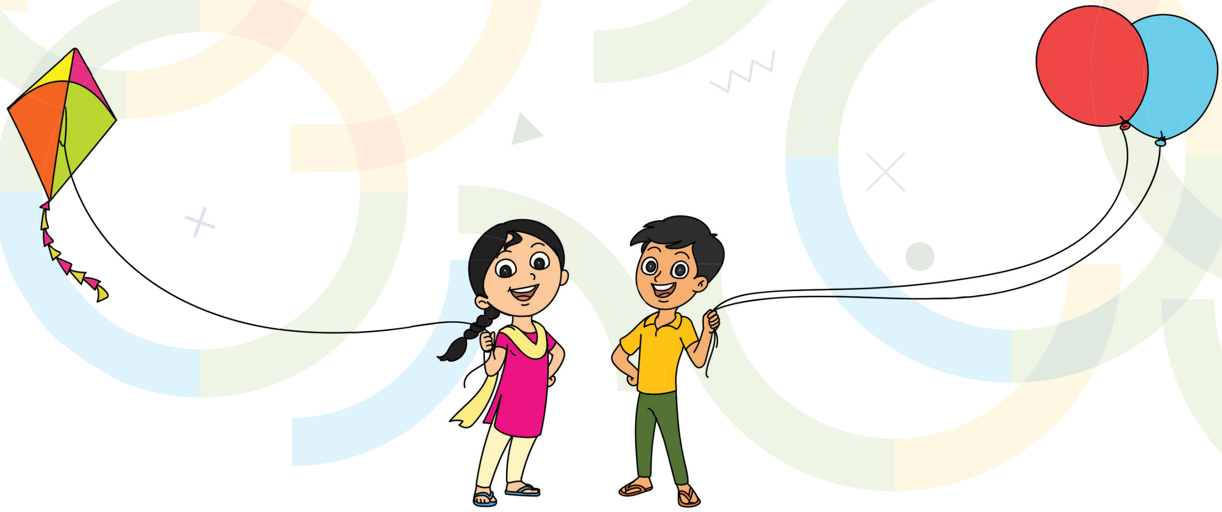

सत्र 8

प्रभावी संचार और संबंधों का निर्माण

परिचय

यह सत्र संचार को प्रभावी बनाने और संबंध निर्माण को समझने में मदद करेगा।

आवश्यक सामग्री

पेपर की शीट, पेन

अवधि

45 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- पहले के सत्रों में हमने संचार, अंतर्वैयक्तिक संचार और समूह संचार के बारे में चर्चा की।
- इन सभी प्रभावी संचार के लिए, कुछ कौशल बहुत ही महत्वपूर्ण हैं जैसे कि बातचीत के दौरान लोगों को ध्यानपूर्वक सुनना, बातचीत के दौरान उनकी प्रशंसा करना, इससे लोगों के साथ अच्छा संबंध बनाने में मदद मिलती है।

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से एक अच्छे सूत्रधार की प्रमुख भूमिकाएँ पूछें। प्रतिभागियों को समुदाय में बाल विवाह पर एक बैठक की योजना बनाने के लिए ग्राम प्रधान से मिलने के अपने अनुभव साझा करने को कहें।

गतिविधि

- प्रतिभागियों से कहें कि यहां हम सरिता की कहानी सुनेंगे। इस कहानी में आप बताएंगे कि बातचीत के दौरान तालमेल बनाने और सक्रिय रूप से सुनने के लिए किस प्रकार कार्य किया गया, जो कि संचार कौशल के लिए बहुत ही जरूरी है।
- इस कहानी में उन्हें बताना होगा कि बातचीत के दौरान तालमेल बनाने और सक्रिय रूप से सुनने का काम कहां हुआ, जो संचार के सबसे प्रभावी कौशल में से एक है।
- अब सबसे कम बोलने वाले प्रतिभागियों को निम्नलिखित कहानी के एक–एक पारा को पढ़ने के लिए कहें:

कहानी

सरिता 15 साल की हो गई है। उसने इस साल अच्छे अंकों से आठवीं कक्षा पास की है। उसके माता–पिता ने उसे आगे की पढ़ाई के लिए हाई स्कूल में भेजने के बजाय उसकी शादी करने का फैसला किया है। सरिता की शिक्षिका को उसके गांव की सीडब्ल्यूसी की सदस्य रानी से उसकी शादी के बारे में पता चला। शिक्षिका ने गांव की सरपंच के साथ मिलकर सरिता के घर जाकर उसके माता–पिता से इस मामले पर बात करने का फैसला किया।

सरपंच के साथ सरिता के घर पहुंचने पर, सरिता की शिक्षिका ने उसके माता–पिता को बताया कि सरिता एक बुद्धिमान और मेहनती लड़की है और कक्षा के होनहार छात्रों में से एक है। बातचीत के दौरान सरिता की शिक्षिका ने उसके माता–पिता की प्रशंसा की और कहा कि सरिता इतने अच्छे अंकों से इसलिए उत्तीर्ण हो रही है क्योंकि उन्होंने हमेशा उसकी पढ़ाई का ध्यान रखा है। यह सुनकर सरिता के माता–पिता बहुत खुश हुए और बातचीत के दौरान काफी सहज महसूस करने लगे। इस तरह उनका माता–पिता से अच्छा रिश्ता बन गया।

शिक्षिका ने उन्हें सरिता की पढ़ाई जारी रखने के फायदे भी समझाए। सरिता के माता–पिता ने यह कहकर उसकी शादी करने के अपने फैसले को सही ठहराने की कोशिश की कि हाई स्कूल उनके घर से पैदल दूरी पर नहीं है और वे उसकी शिक्षा का खर्चा उठाने की स्थिति में भी नहीं हैं। सरिता की शिक्षिका ने उनकी बात बड़े ध्यान से सुनी और सरपंच से सरकारी योजनाओं संबंधित सारी जानकारी देने का अनुरोध किया।

गांव के सरपंच ने सरकार द्वारा चलायी जा रही छात्रवृत्ति एवं साइकिल योजना के बारे में बताया। उन्होंने उन्हें समझाया कि इन योजनाओं का लाभ उठाकर सरिता लंबी दूरी तय किए बिना अपनी पढ़ाई जारी रख सकती है और उन पर कोई अतिरिक्त खर्चे का बोझ भी नहीं पड़ेगा। छात्रवृत्ति योजना के बारे में सुनकर सरिता को भी लगा कि अब उसके माता–पिता उसे उसकी पढ़ाई जारी रखने की अनुमति दे देंगे। सरिता के माता–पिता ने *सरपंच* से कहा कि अब वे उसकी शादी नहीं करेंगे और उसे पढ़ाई जारी रखने देंगे। सरिता बहुत खुश हुई लेकिन शिक्षिका उसके माता–पिता की बातों और उनके भावों पर ध्यान दे रही थी। उसे आश्चर्य हुआ कि सरिता के माता–पिता इतनी आसानी से उसका अनुरोध कैसे मान गए। सरिता की शिक्षिका ने सरिता और उसके परिवार को अगले सोमवार को स्कूल आने के लिए कहा, ताकि सरिता छात्रवृत्ति के लिए अपना आवेदन फॉर्म भर सके। उसने सरिता को अपने माता–पिता के महत्वपूर्ण दस्तावेजों के साथ अपनी पुरानी मार्कशीट, आधार कार्ड और रिपोर्ट कार्ड भी लाने के लिए कहा।

अगले सोमवार को, सरिता अपनी शिक्षिका से मिलने नहीं गई। स्कूल ख़त्म होने के बाद स्कूल शिक्षिका सरिता के स्कूल न आने के कारण का पता लगाने के लिए उसके घर गई। संयोग से सरिता के पिता घर पर ही थे। उन्होंने उनसे कहा कि सरिता को आगे अपनी पढ़ाई को जारी रखना सुविधाजनक नहीं लग रहा है, लेकिन जैसा कि समझाया गया है, अब वे सरिता की जल्द शादी नहीं करेंगे। जब सरिता की शिक्षिका ने सरिता से इस बारे में पूछा तो उसने भी कहा कि उसके पिता सही हैं। सरिता की शिक्षिका उसकी शारीरिक भाषा और आँखों को बहुत गंभीरता से देख रही थी। उसे एहसास हुआ कि सरिता उससे कुछ और कहना चाह रही थी। उस समय उसने सरिता के माता–पिता के सामने कुछ नहीं कहा और वह सीधे अपने घर वापस आ गई। उसने सरिता से अलग से मिलने और बात करने का फैसला किया।

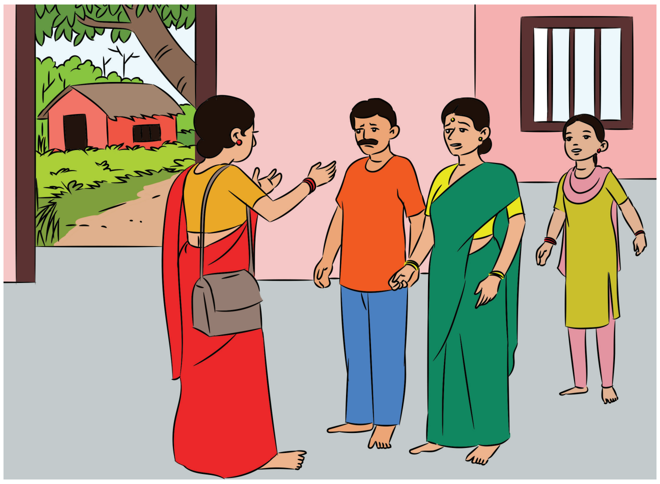

दो दिन बाद सरिता की शिक्षिका फिर उससे अकेले में मिलीं, उससे बात की और उसकी पूरी कहानी ध्यान से सुनी। सरिता ने उन्हें बताया कि उसके परिवार वाले चाहते हैं कि जल्द से जल्द उसकी शादी हो जाए, ताकि वे इस जिम्मेदारी से मुक्त हो सकें। सरिता की दादी का भी कहना है कि उनकी भी शादी बहुत कम उम्र में हो गई थी और वो चाहती हैं कि उनके मरने से पहले उनकी पोती सरिता की भी शादी हो जाए। शिक्षिका ने धैर्यपूर्वक सरिता की बात सुनी और *सरपंच* के साथ मिलकर उसके माता–पिता से दोबारा इस विषय पर चर्चा की। उन्होंने सरिता के माता–पिता को समझाया कि सरिता अभी बच्ची है और इस उम्र में उसकी शादी करना ठीक नहीं है। उन्होंने उसे यह भी समझाया कि सरिता के लिए कम उम्र में शादी करना गैर–कानूनी है। उसने उन्हें सेना में शामिल होने के सरिता के सपने के बारे में भी बताया। काफी बातचीत के बाद, सरिता के माता–पिता उसका छात्रवृत्ति आवेदन फॉर्म भरने के लिए सहमत हुए। शिक्षिका अपने साथ आवेदन पत्र लेकर आई थीं और उन्होंने इसे भरने में सरिता की मदद की।

आख़िरकार सभी के प्रयासों से वे सरिता के माता–पिता को उसकी अभी शादी न करने और उसकी शिक्षा जारी रखने के लिए मनाने में सफल रहीं। सरिता ने अच्छे अंकों के साथ दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की और पास के ब्लॉक में एक संस्थान में शामिल हो गई जो सेना में शामिल होने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता था। सरिता के माता–पिता बहुत खुश हैं कि उन्होंने उसकी शिक्षिका और सरपंच की बात सुनी एवं उनसे सहमत हुए।

- कहानी के बाद, प्रतिभागियों से कहानी पर उनके विचार सुनें और कहानी के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताएं।

सीख का सार

प्रतिभागियों को बताएं कि बातचीत की शुरुआत में शिक्षिका ने सरिता के साथ-साथ, माता-पिता की भी प्रशंसा की जिससे अच्छा तालमेल बना। वह पूरे परिवार के साथ लगातार संपर्क में रहीं और सरिता के माता-पिता को उसकी पढ़ाई जारी रखने के लिए मनाने में सफल रहीं।

प्रतिभागियों को बताएं कि शिक्षिका ने सरिता के माता-पिता की बात ध्यान से सुनी। सरिता से अलग से बात करने और उसकी बात ध्यान से सुनने पर ही उसे मुख्य समस्या समझ में आई।

सरिता के हाव-भाव और शारीरिक भाषा को समझने के कारण उसने सरिता से अलग से बात करने का फैसला किया और उसके विचारों को स्पष्ट रूप से समझ पाई।

इस वजह से हम यहां यह भी समझ सकते हैं कि बातों को ध्यान से सुनने के साथ-साथ शारीरिक हाव-भाव को भी समझना जरूरी है।

'तालमेल बनाना' किसी अन्य व्यक्ति या समूह के अनुरूप समझ की स्थिति है जो बेहतर और आसान संचार को सक्षम बनाता है। दूसरे शब्दों में, किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ चीज़ें समान होने से संबंध या तालमेल बनाना अच्छा होता है, और इससे संचार प्रक्रिया आसान और आमतौर पर अधिक प्रभावी हो जाती है।

"सक्रिय रूप से सुनना' का अर्थ है, वक्ता के संदेश को निष्क्रिय रूप से 'सुनने' के बजाय जो कहा जा रहा है उस पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करना है। सक्रिय रूप से सुनना में सभी इंद्रियों के साथ सुनने के साथ-साथ वक्ता पर पूरा ध्यान देना भी शामिल होता है। यह महत्वपूर्ण है कि 'सक्रिय श्रोता' भी सुनते हुए 'दिखाई' दे, अन्यथा वक्ता यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि वे जिस बारे में बात कर रहे हैं वह श्रोता उसमें रुचि नहीं ले रहा है।

ध्यानपूर्वक या सक्रिय रूप से सुनने के अशाब्दिक संकेत

मुस्कुराना

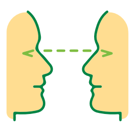

आँख का संपर्क

स्थिति

नकल करना

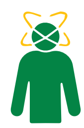

ध्यान भटकाना

ध्यान रखें:
सक्रिय रूप से सुनने के अशाब्दिक संकेतों को सीखना और उनकी नकल करना पूरी तरह से संभव है। सुनने और समझने के शाब्दिक संकेतों की नकल करना अधिक कठिन है।

सीख पर विचार करें

आप अपने काम के दौरान कई लोगों के साथ बातचीत करते हैं। अपने काम में समुदाय के सदस्यों में से किसी एक से मिलने के बाद, उन चीज़ों को नोट करें जो आपने अपनी बातचीत में छोड़ दी थीं, जिससे आपका संचार प्रभावी हो जाता और समुदाय के सदस्य के साथ संबंध निर्माण में मदद मिलती। ये हो सकते हैं - समुदाय के सदस्य को बोलने के लिए दिया गया समय, बातचीत के दौरान ध्यान से सुनना, उनके जीवन में रुचि लेना, बातचीत के दौरान आंखों का संपर्क बनाए रखना आदि।

अपने अगले भ्रमण के दौरान, नोट किए गए बिंदुओं को याद रखें और उन्हें अपनी बातचीत में शामिल करने का प्रयास करें।

संदर्भ

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन पर मॉड्यूल 7 से सत्र 3.3 – सीपी स्मार्ट किट।

https://drive.google.com/file/d/1vncOLowl1qMUJXc954Y4Q_oF0rYdTxaj/view?usp=sharing

फिल्म धमाल का यह वीडियो सक्रिय रूप से सुनने के प्रमुख घटकों को दर्शाता है–

https://www.youtube.com/watch?v=UW8nEQ4hA3E&t=211s

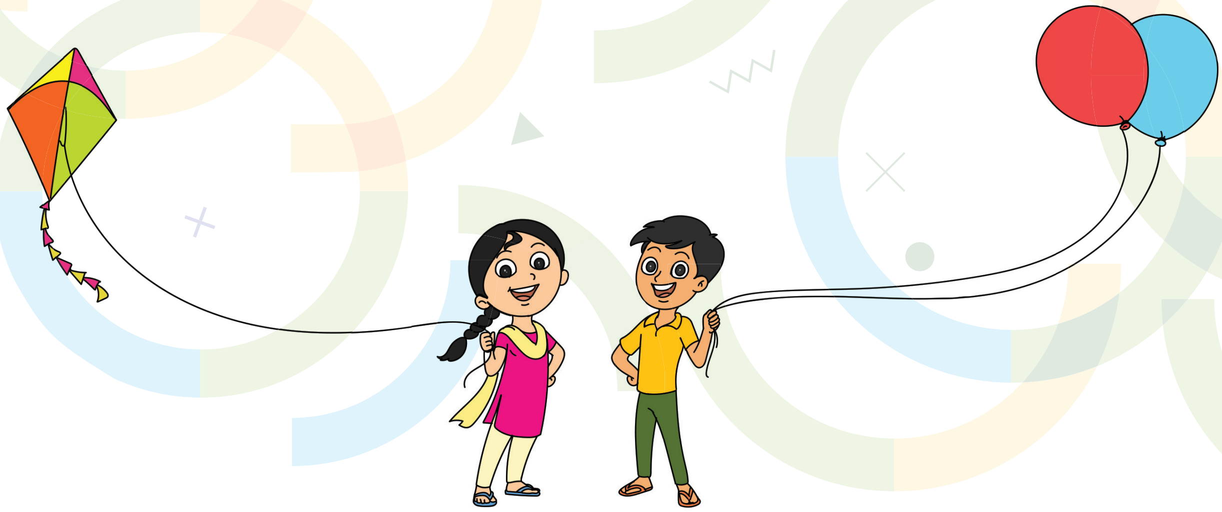

सत्र 9

प्रश्न पूछने की कला

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि प्रश्न कैसे पूछे जाएं, विशेषतः बच्चों से।

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

आवश्यक सामग्री

पेपर की शीट, पेन

अवधि

45 मिनट

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। किन्हीं दो-तीन वॉलंटियर से सक्रिय रूप से सुनना, संबंध बनाना, गैर-मौखिक संकेतों का उपयोग करना आदि जैसे संचार कौशल का उपयोग करने के अपने अनुभव साझा करने को कहें। वे यह भी बताएं कि क्या ये कौशल उनके दिन-प्रतिदिन के संचार में सहायक हैं।

गतिविधि

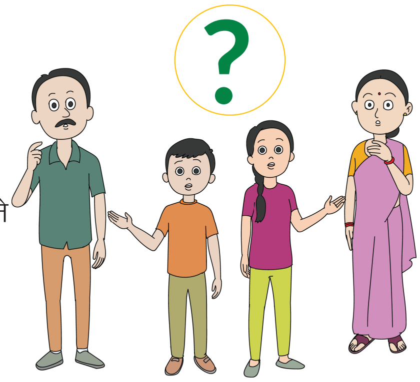

- प्रतिभागियों से चार वॉलंटियर को बुलाएं और उन्हें समझाएं कि वे खुद को माता–पिता के रूप में कल्पना कर सकते हैं जो बाहर जा रहे हैं और अपने बच्चों को उनकी अनुपस्थिति के दौरान उनके आचरण, व्यवहार, पढ़ाई आदि के बारे में निर्देश दे रहे हैं। समूह के बाकी सदस्य उनके बच्चों के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- माता–पिता से यह भूमिका निभाने के लिए कहें कि वे बच्चों से लौटने पर क्या पूछेंगे।
- माता–पिता को पहले केवल बंद प्रश्न (क्लोज़ एंडेड) पूछने को कहें जैसे कि क्या आपने खाना खाया? क्या आपने टीवी देखा? क्या आपने अपना होमवर्क पूरा कर लिया? क्या आपने आपस में लड़ाई की? क्या आप घर से बाहर गए थे?
- माता–पिता के दूसरे समूह को निर्देश दिया जाएगा कि वे खुले प्रश्न पूछें जैसे कि हमारे घर में न रहने पर आपने क्या खाया? स्कूल में आपका दिन कैसा था? क्या होमवर्क मिला था? जब हम बाहर थे तब आपने अपना समय कैसे बिताया?
- एक बार जब गतिविधि पूरी हो जाए, तो प्रतिभागियों से पूछें कि उन्होंने क्या देखा? दोनों प्रकार के माता–पिताओं को बच्चों द्वारा दिए गए उत्तरों में क्या अंतर था? किस मामले में प्रतिक्रियाएं और जानकारी अधिक विस्तृत रूप से सामने आएंगी?

सीख का सार

हम बातचीत के दौरान दो प्रकार के प्रश्न पूछते हैं:

- **बंद प्रश्न वे होते हैं जिनका उत्तर आसानी से 'हां', 'नहीं' या एक या दो शब्दों में दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, क्या आपने आज दोपहर का भोजन किया? या आपने दोपहर का भोजन कितने बजे किया?**
- **खुले प्रश्न वे होते हैं जिनका उत्तर आसानी से 'हां', 'नहीं' या एक या दो शब्दों में नहीं दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आपने आज दोपहर के भोजन के दौरान क्या खाया? स्कूल में आपका दिन कैसा था? क्या होमवर्क मिला था?**

प्रतिभागियों को बताएं कि बच्चों के साथ बातचीत करते समय ज्यादातर खुले प्रश्नों का उपयोग करना एक अच्छा अभ्यास है ताकि दूसरे व्यक्ति को जितना संभव हो सके अपने विचार व्यक्त करने का मौका मिले।

प्रतिभागियों से प्रश्न पूछते समय सरलता का ध्यान रखने और प्रश्न पूछते समय अनजान शब्दों का प्रयोग न करने को कहें।

एक साथ बहुत सारे प्रश्न न पूछें।

प्रश्न पूछने के बाद उत्तर की प्रतीक्षा करने के लिए धैर्य रखें।

अगर लोगों को कोई सवाल समझ नहीं आ रहा है तो उसे अलग तरीके से पूछें।

हमेशा सरल प्रश्न पूछकर शुरुआत करें और बाद में जटिल प्रश्नों की ओर बढ़ें।

और? तब? तो?... प्रश्नों के रूप में इस तरह के शब्दों का उपयोग करना अच्छा है।

सीख पर विचार करें

अपने घर पर परिवार के सदस्यों और बच्चों के साथ गतिविधि दोहराएं।	जवाबों के अंतर पर ध्यान दें और सत्र से मिली सीख के साथ संबंध स्थापित करें।

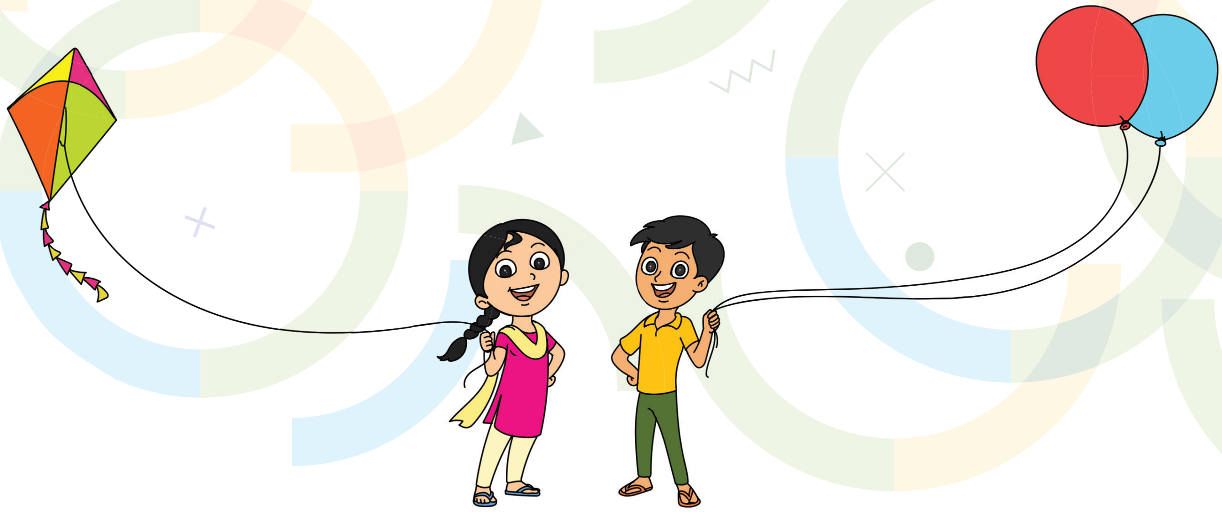

सत्र 10

उदाहरणों की शक्ति

परिचय

यह सत्र संचार को बाल–अनुकूल बनाने के लिए बच्चों के मुताबिक उपयुक्त उदाहरणों का उपयोग करने के महत्व पर चर्चा करता है। मॉड्यूल आगे इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि उदाहरणों का उपयोग बच्चों के साथ बातचीत करते समय अवधारणाओं को स्पष्ट करने में कैसे मदद करता है।

आवश्यक सामग्री

केस स्टडी नोट

अवधि

60 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या हम रोजमर्रा की बातचीत में उदाहरणों का उपयोग करते हैं?
- हम उदाहरणों का उपयोग क्यों करते हैं और इनकी क्या भूमिका होती है?

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से पूछें कि क्या वे खुले और बंद प्रश्नों के कुछ उदाहरण दे सकते हैं। प्रतिभागियों के साथ उनके द्वारा बच्चों के साथ बंद और खुले प्रश्नों का उपयोग करने के उनके अनुभवों पर चर्चा करें।

गतिविधि – उपयुक्त उदाहरण संचार को सहज बनाते हैं

- प्रतिभागियों को दो समूहों में बांटें – दोनों टीमों को स्थिति समझाते हुए एक–एक उदाहरण दें।
- पीआरआई सदस्यों ने अध्यापकों के साथ मिलकर गांव के स्कूल में गणतंत्र दिवस के अवसर पर एक छोटा समारोह आयोजित किया। समारोह का विषय 'अनुशासन ही सफलता की कुंजी' था। समारोह खत्म होने के बाद पीआरआई सदस्यों ने बच्चों को संबोधित किया। उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित दो घटनाएं बताई गईं:
  - **समूह 1**: ''दिल्ली में, स्कूलों के सख्त नियम हैं। जो भी बच्चा स्कूल के नियम तोड़ता है उसे दंडित किया जाता है, वहीं अनुशासन बनाए रखने वाले बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है। इसलिए अच्छा होगा यदि आप सब भी इस विद्यालय का अनुशासन बनाये रखें। अनुशासन बच्चों को भावनात्मक और सामाजिक रूप से पूरी तरह विकसित वयस्क (adult) बनने में मदद करता है। शिक्षक ने यह भी साझा किया कि स्कूल में अनुशासन बनाए रखने के लिए एक बच्चे को पुरस्कार भी दिया गया था।''

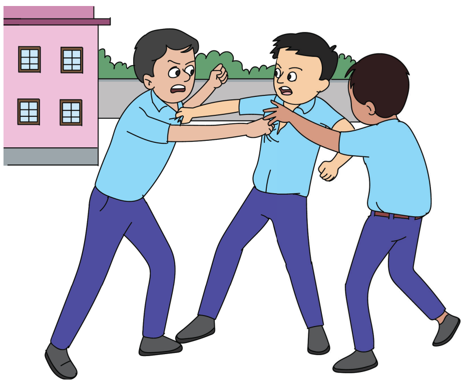

  - **समूह 2**: हर्ष का अभी स्कूल में दाखिला हुआ था और उसका दाखिला हुए दो हफ्ते हुए थे। उसी दौरान ही गणतंत्र दिवस पर यह समारोह आयोजित हुआ था। उसकी बहन के घर से चले जाने के कारण उसका परिवार एक गांव से दूसरे गाँव में आ गया था और इसलिए उसे इस स्कूल में भर्ती कराया गया। उसके परिवार को गांव में शर्मिंदगी के कारण गाँव छोड़ना पड़ा। उसे स्कूल के माहौल में तालमेल बिठाने में कठिनाई हो रही थी। वह उन बच्चों के साथ लड़ता था जो उसकी बहन के नाम को लेकर उसे चिढ़ाते थे। यहां तक कि वहां कुछ बच्चों के साथ उसकी हाथापाई भी हो गई। शिक्षकों ने अन्य बच्चों को हर्ष का उदाहरण दिया कि, "हर्ष को देखो, वह अन्य बच्चों के साथ दोस्ती नहीं कर पा रहा है और उनसे लड़ रहा है। आप सभी को उसके जैसा नहीं बनना चाहिए। सभी बच्चों को अच्छा व्यवहार करना चाहिए और मित्रतापूर्वक रहना चाहिए।"

निम्नलिखित पर चर्चा करें

गतिविधि के अंत में, प्रतिभागियों से उदाहरण 1 और 2 के बारे में निम्नलिखित सवाल पूछें:

- तथ्यात्मक रूप से क्या उदाहरण सही थे और समझने में आसान थे?
- क्या उदाहरण विषय से मिलते-जुलते थे?
- क्या उदाहरण ग्रामीण क्षेत्र से मेल खाते थे?
- क्या उन्होंने किसी मुख्य व्यक्ति का उल्लेख किया या उस व्यक्ति की पहचान उजागर की?

- दिल्ली के स्कूलों में अनुशासन के बारे में उदाहरण 1 दोहराएं
  - तथ्यात्मक रूप से सही और समझने में आसान था।
  - किसी विशिष्ट व्यक्ति का उल्लेख नहीं किया या उस व्यक्ति की पहचान उजागर नहीं की।
  - चर्चा से संबंधित था – इसमें स्कूली जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में अनुशासन की बात की गई थी।
  - गोपनीयता सुनिश्चित की गई।
  - इसका संबंध ग्रामीण संदर्भ से नहीं है। इसका संदर्भ दिल्ली के स्कूलों से है।
- हर्ष के बारे में उदाहरण 2 दोहराएं
  - तथ्यात्मक रूप से सही था और चर्चा के विषय से संबंधित था लेकिन यह उपयुक्त नहीं था।
  - यह एक विशिष्ट व्यक्ति को संदर्भित करता है और उस व्यक्ति की पहचान को उजागर करता है।
  - इसमें हर्ष की स्थिति और उसके दुख को ध्यान में नहीं रखा गया।

सीख का सार

उदाहरण बयानों को स्पष्ट बनाते हैं, प्राप्तकर्ता और श्रोता को अधिक जानकारी प्रदान करते हैं, और वास्तविक जीवन की स्थितियों के संबंध में तथ्य या विचार को गलत तरीके से समझे जाने की संभावना कम हो जाती है।

बच्चों के साथ बातचीत करते समय उदाहरण देने से उन विचारों और अवधारणाओं को समझाने में मदद मिलती है जो कठिन होते हैं या जिनके बारे में कम जानकारी होती है।

उदाहरण बच्चों को उनके संदर्भ के लिए उपयुक्त और परिचित विचार को समझने में भी मदद करते हैं। बच्चों से उदाहरण साझा करने के लिए कहने से उन्हें यह बताने में मदद मिलती है कि वे अपने आस-पास क्या देख सकते हैं या खुद अनुभव कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे से ऐसा उदाहरण देने के लिए कहना जहां उसने किसी बच्चे को संकट में देखा हो, तो उसके क्षेत्रों में बाल संरक्षण संबंधी मुद्दों और समस्याओं का खुलासा हो सकता है।

उदाहरण परिस्थिति से मिलते-जुलते हों और बच्चे उन्हें अपने आप से जोड़ पाएं।

उदाहरण देते समय याद रखने योग्य कुछ बातें:

- उदाहरण सही हों
- समझने में आसान हों
- स्थानीय परिवेश के अनुकूल हों
- किसी को ठेस पहुंचाने वाले न हों
- वे चर्चा के विषय से संबंधित हों
- उदाहरण देते समय, जो लोग वहां बैठे हैं उनकी गोपनीयता सुनिश्चित की जानी चाहिए

सीख पर विचार करें

प्रतिभागियों से उनके घरों और समुदायों के बच्चों से यह समझने के लिए कहें कि उनके आदर्श कौन हैं? (ये लोकप्रिय खिलाड़ी, अभिनेता, प्रभावशाली व्यक्ति हो सकते हैं) उनके जीवन से उपयुक्त उदाहरण लें और बच्चों के साथ साझा करें जो आपको लगता है कि बच्चों के व्यवहार में बदलाव लाने में मददगार साबित होंगे।

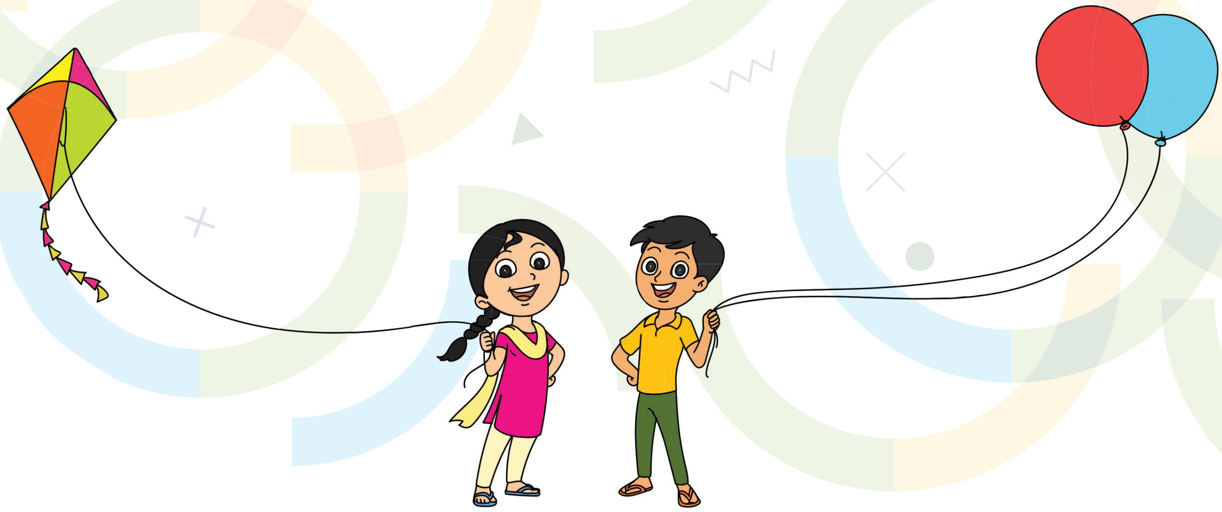

सत्र 11

बाल संरक्षण हेतु समावेशी (INCLUSIVE) वातावरण को बढ़ावा देना

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को समझने में मदद करेगा कि उनके समुदाय में कुछ बच्चे दूसरों की तुलना में उनसे ज्यादा असुरक्षित हैं। इन बच्चों की सुरक्षा और समावेशन सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न प्रयासों की आवश्यकता होती है।

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/ *बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

आवश्यक सामग्री

कागज की छोटी पर्ची पर लिखी भूमिकाओं की सूची और प्रश्नों की सूची

अवधि

60 मिनट

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या सभी बच्चों को सुरक्षा की आवश्यकता है?
- क्या ऐसे बच्चे हैं जिन्हें दूसरों की तुलना में ज्यादा सुरक्षा की आवश्यकता है?

कुछ जवाब आने के बाद, प्रतिभगियों से इसके बारे में जानने के लिए खेल खेलें।

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से संचार में उदाहरणों के उपयोग के महत्व के बारे में पूछें। प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि प्रभावी संचार के लिए वे बच्चों के साथ किन उदाहरणों का उपयोग कर सकते हैं।

गतिविधि – आगे बढ़ना

- सुगमकर्ता समूह से पांच वॉलंटियर को आगे आने के लिए अनुरोध करेंगे।
- प्रत्येक प्रतिभागी को नीचे दी गई भूमिकाओं में से एक भूमिका दी जाएगी:
  - सरपंच का बेटा
  - दिव्यांग लड़की
  - एक बाल मज़दूर
  - एक अनाथ लड़की
  - बेहद गरीब परिवार का एक लड़का
- यदि संभव हो, तो इन भूमिकाओं को कागज के छोटे टुकड़ों पर लिखें और प्रत्येक प्रतिभागी को दें।
- फिर सभी प्रतिभागियों को एक लाइन में एक दूसरे के बगल में खड़ा होने के लिए कहें।
- सुगमकर्ता नीचे दिए गए प्रश्नों को एक–एक करके पढ़ेंगे:
  - क्या आप अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर पाएंगे।
  - क्या आपको अपने परिवार के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा?
  - क्या आपके पास अपने दोस्तों के साथ खेलने का समय होगा?
  - क्या आपको एक दिन में अपनी भूख के अनुसार भोजन मिलेगा?
  - क्या आप रोज़ स्कूल जाएंगे?
  - क्या आप किसी भी प्रकार की हिंसा से सुरक्षित रहेंगे?
  - क्या आपको पढ़ाई के लिए ट्यूटर या कुछ अतिरिक्त मदद मिलेगी?
  - क्या आप बार-बार बीमार होते हैं?
- यदि प्रतिभागी अपनी भूमिका में प्रश्न का उत्तर 'हां' में देता है, तो उसे एक कदम आगे बढ़ना होगा। यदि कोई प्रतिभागी 'नहीं' में उत्तर देता है तो उसे उसी जगह पर खड़े रहना होगा।

निम्नलिखित पर चर्चा करें

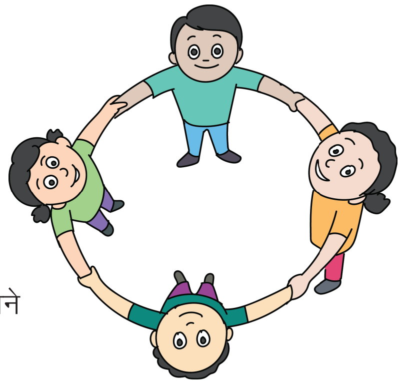

गतिविधि के अंत में, प्रतिभागियों से पूछें कि कौन–सा वॉलंटियर आगे बढ़ पाया और कौन पीछे रह गया?

- पूछें कि गतिविधि के अंत में कौन–से बच्चे आए?
- पूछें कि कुछ बच्चे आगे क्यों चले गये और बाकी पीछे क्यों रह गये? चर्चा करें और प्रतिभागियों को बच्चों द्वारा सामना किए जाने वाले भेदभाव के बारे में बताएं।

इस बात पर प्रकाश डालें कि जहां सभी बच्चों को सुरक्षा की आवश्यकता है, वहीं हमारे समुदायों में कुछ ऐसे भी हैं जो अधिक असुरक्षित हैं। जो बच्चे गरीब हैं, दिव्यांग हैं, उनके पास पारिवारिक सहयोग नहीं है और विशेष रूप से लड़कियों को अधिक सामुदायिक सहयोग की आवश्यकता हो सकती है।

- इन कमजोर बच्चों पर दुर्व्यवहार और शोषण का ख़तरा भी अधिक होगा। उन्हें अधिक सुरक्षा की जरूरत है।
- पूछें कि हम सभी इन बच्चों की सुरक्षा के लिए क्या कर सकते हैं।

चर्चा बिन्दु

- समुदाय के सदस्यों द्वारा कमजोर और जोखिम वाले बच्चों की पहचान की जानी चाहिए।
- ये बच्चे शिक्षा जारी रख सकें इसके लिए उनके परिवारों/देखभाल करने वालों को समुदाय द्वारा सहयोग दिया जाना चाहिए।
- उन्हें बाल संरक्षण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ा जा सकता है।
- ऐसे बच्चों को बाल श्रम में न धकेला जाए या उनका शारीरिक या यौन शोषण न हो या उनकी जल्दी शादी न कर दी जाए, समुदाय यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास कर सकते हैं।

सीख पर विचार करें

प्रतिभागियों से उनके घरों या समुदाय में बच्चों के साथ बातचीत करके यह पता लगाने के लिए कहें कि क्या वे या उनके दोस्त स्कूल में या अपने दोस्तों के साथ खेलने के दौरान बहिष्कार या उपेक्षा का शिकार हुए हैं?

एसएमसी सदस्यों के साथ बातचीत करें और पता लगाएं कि क्या कुछ बच्चों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है तथा इन मुद्दों को कैसे संबोधित किया जा सकता है।

अगली गतिविधि शुरू करने से पहले चर्चा करें कि उस स्थिति का समाधान कैसे निकाला जा सकता है।

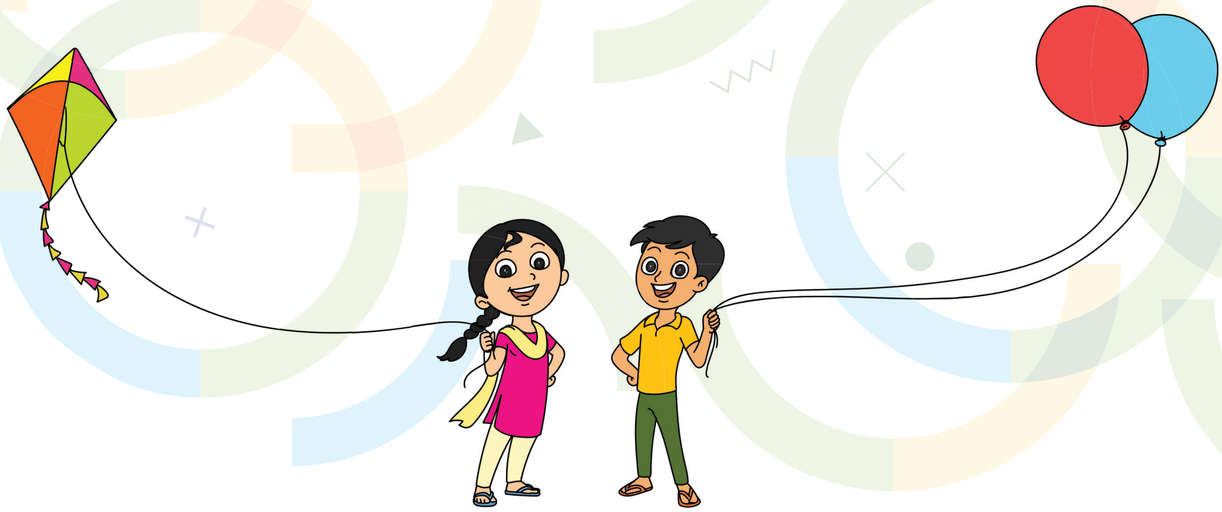

सत्र 12

बाल कल्याण हेतु सामाजिक मोबिलाइजेशन और सहायक वातावरण

परिचय

यह सत्र बच्चों के लिए एक सहायक वातावरण बनाने के लिए सामुदायिक नेटवर्क को मजबूत करने के महत्व पर केंद्रित है। यह विशेष रूप से बाल संरक्षण को बढ़ावा देने और बच्चों के लिए पोषण संबंधी वातावरण बनाने के लिए स्थायी समितियों की भूमिका तथा प्रमुख सामुदायिक हितधारकों की क्षमताओं में सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है।

आवश्यक सामग्री

सत्र में दी गई जिम्मेदारियों के घेरे संबंधी निर्देश

अवधि

60 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- एक बच्चे की अपने परिवेश संबंधी क्या आवश्यकताएं हैं?
- बच्चों को पर्याप्त भोजन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, खेल और स्वास्थ्य सेवाएं मिलें, यह किसके द्वारा सुनिश्चित किया जा सकता है?

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से संचार में उदाहरणों के उपयोग संबंधित महत्व के बारे में पूछें। प्रतिभागियों के साथ चर्चा करें कि प्रभावी संचार के लिए वे बच्चों के साथ किन उदाहरणों का उपयोग कर सकते हैं।

गतिविधि – जिम्मेदारियों के घेरे (रिंग)

- प्रतिभागियों से कहें कि वे एक बड़े घेरे में खड़े हो जाएं।
- एक वॉलंटियर को आगे आने और एक किशोरी लड़की के रूप में घेरे के बीच में खड़े होने के लिए कहें।
- समूह से पूछें कि किशोरी को उसके परिवेश में सबसे अधिक कौन प्रभावित करेगा। संभावना है कि उत्तर माता–पिता, रिश्तेदार, मित्र और पड़ोसी होंगे। समूह में से तीन–चार वॉलंटियर को परिवार के सदस्य, पड़ोसी और मित्र/मित्रों के रूप में नकल करने को कहें और किशोरी के चारों ओर एक छोटा घेरा बनाने के लिए कहें।
- समूह से पूछें कि लड़कियों की शिक्षा और किशोरियों के स्वास्थ्य एवं पोषण सेवाओं तक पहुंच को कौन–कौन प्रभावित करता है। दिए जाने वाले उत्तरों में शिक्षक, पीआरआई सदस्य, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा, एसएचजी आदि हो सकते हैं। बताए गए हितधारकों के रूप में तीन–चार वॉलंटियर को बुलाएं और छोटे घेरे के चारों ओर एक और बड़ा घेरा बनाने के लिए कहें।
- अब किशोर लड़की के रूप में बने वॉलंटियर से पूछें कि बेहतर विकास के लिए उसे किन चीज़ों की आवश्यकता होगी। (जवाब शिक्षा, भोजन और पोषण, कौशल विकास जारी रखने का अवसर हो सकता है।)
- किशोर लड़की के पास घेरे में खड़े वॉलंटियर से पूछें कि परिवार और रिश्तेदारों को यह सुनिश्चित करने के लिए क्या करना चाहिए कि किशोरी को वह मिल जाए जो उसे चाहिए। कभी–कभी किशोरियों के लिए पारिवारिक स्तर पर चुनौतियां होती हैं जैसे शादी का दबाव, स्कूल छोड़ने का दबाव और लड़के–लड़कियों के बीच भेदभाव, इन चुनौतियों से निपटने के लिए क्या किया जा सकता है?

- क्या गांव में ऐसे लोगों के उदाहरण हैं जो इन बाधाओं को पार करने में सक्षम रहे हैं, या जिन्होंने असाधारण रूप से ऐसे मामलों में सहायता की हो और रोल मॉडल बन गए हों? इस सामाजिक लामबंदी (मोबिलाइजेशन) की प्रक्रिया के दौरान इन लोगों की कहानियों का सबसे अच्छा उपयोग कैसे किया जा सकता है?
- अगले घेरे में वॉलंटियर से पूछें कि पीआरआई, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा और शिक्षक, धार्मिक गुरू/नेता किशोरियों की सहायता के लिए क्या कर सकते हैं।
- गांव की स्थायी समिति के बारे में बात करें जिसमें सरपंच, एसएचजी सदस्य, अग्रिम पंक्ति (frontline functionaries) के पदाधिकारी और अन्य शामिल हों।
- आखिरी और बड़े घेरे में वॉलंटियर से पूछें कि सरकारी अधिकारी और गैर सरकारी संगठन किशोरियों के सहयोग के लिए क्या करते हैं। पूछें कि क्या उन्हें इसके बारे में पता है या उनके गांव में इसका गठन किया गया है। यदि नहीं, तो बताएं कि जल्द ही इसका गठन कर दिया जाएगा।

निष्कर्ष निकालते हुए यह कहें कि हितधारकों के प्रत्येक समूह की बच्चों के लिए सुरक्षात्मक और सहायक वातावरण बनाने की जिम्मेदारी है।

निम्नलिखित पर चर्चा करें

चर्चा करते हुए गतिविधि का समापन करें:

- बच्चों के लिए सहायक और सुरक्षात्मक वातावरण सुनिश्चित करने में विभिन्न स्तरों पर कई हितधारकों की भूमिका होती है।
- इसके लिए परिवार, गांव और संगठनात्मक स्तर पर सभी हितधारकों का सहयोग आवश्यक है।
- ग्राम स्तर के हितधारकों विशेष रूप से स्थायी समिति बच्चों के लिए एक सुरक्षात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वे निम्न बातों के लिए जिम्मेदार हैं:
  - असुरक्षित बच्चों की पहचान करना
  - बच्चों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए माता–पिता और परिवारों को संवेदनशील बनाना
  - वंचित बच्चों और उनके परिवारों को सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों से जोड़ना
  - बाल अधिकारों और विभिन्न हितधारकों की भूमिकाओं तथा जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता पैदा करना
  - नकारात्मक सामाजिक मान्यता और प्रथा की पहचान करना और समाज के प्रभावशाली लोगों को जोड़ कर उनका समाधान करना और समुदाय को सुरक्षित और सक्रिय वातावरण निर्माण के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता की शपथ दिलवाना
- सरकारी अधिकारी और गैर–सरकारी संगठन यह सुनिश्चित करते हैं कि बच्चों और उनके परिवारों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध हों।

सीख का सार

सभी बच्चों और किशोरों को पर्याप्त शिक्षा, स्वास्थ्य तथा खेल के अवसरों की आवश्यकता होती है। उन्हें घर पर भी देखभाल और प्यार की आवश्यकता होती है। उन्हें परिवारों और समुदायों में हिंसा तथा अन्य प्रकार के दुर्व्यवहार से बचाया जाना चाहिए।

विभिन्न हितधारक बच्चों के लिए एक सुरक्षात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार बच्चों को तत्काल देखभाल और सहायता प्रदान करते हैं साथ ही उन्हें बढ़ने और विकसित होने के लिए सहायक वातावरण भी प्रदान करते हैं। हालांकि, यदि परिवार की जिम्मेदारी का चक्र टूट गया है, यानी, यदि बच्चे को हिंसा का सामना करना पड़ता है या उसे पर्याप्त भोजन और शिक्षा से वंचित किया जाता है, तो परिवार बच्चे के लिए सबसे अच्छा वातावरण नहीं है।

इसी प्रकार, ग्राम स्तर के हितधारकों/स्थायी समिति के सदस्यों की जिम्मेदारी है कि वे यह सुनिश्चित करें कि बच्चों की स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सेवाओं तक पहुंच हो तथा सामुदायिक स्तर पर बच्चों के लिए एक सुरक्षात्मक वातावरण तैयार किया जाए। असुरक्षित बच्चों और परिवारों की पहचान करें तथा उन्हें सहायता प्रदान करें।

ग्राम स्तर के हितधारक विशेष रूप से स्थायी समिति बच्चों के लिए एक सुरक्षात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सरकारी अधिकारी और गैर-सरकारी संगठन यह सुनिश्चित करें कि ग्राम स्तर पर सभी सेवाएं किसी भी कमी और बिना देरी किए पर्याप्त रूप से प्रदान की जाएं।

सीख पर विचार करें

प्रतिभागियों से पूछें कि वे बच्चों के लिए सुरक्षात्मक और सहायक वातावरण कैसे बना सकते हैं।	सुबह जल्दी या रात में अपने इलाके में टहलने जाएं। क्या आपने कोई ऐसा बच्चा देखा है जिसे सहायता या ध्यान की आवश्यकता है? इस मामले में आप क्या कर सकते हैं?

संदर्भ

बाल संरक्षण के विभिन्न मुद्दों पर दिखाई जाने वाली सामाजिक गतिशीलता संबंधित गतिविधियां

हिंसा और बाल यौन शोषण को समाप्त करना

स्थानीय युवा समूह/बालिका मंच के साथ जुड़ें और उनके साथ चर्चा करें कि क्या वे विभिन्न प्रकार के बाल शोषण के बारे में जानते हैं जिनसे बच्चे असुरक्षित हैं? उन्हें स्थानीय पुलिस अधिकारी से संपर्क करने और युवा समूह के मंच के माध्यम से पोक्सो (यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम) पर एक सत्र आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

बाल सुरक्षा मेला

मानव तस्करी से निपटने और बच्चों की सुरक्षा सुदृढ़ करने हेतु आप स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर एक मासिक बाल सुरक्षा मेला आयोजित करें, जिसमें स्थानीय पुलिस वीडियो और पोस्टर के माध्यम से मानव तस्करी पर बच्चों के बीच जागरूकता पैदा करती है। बच्चों को बताया जायेगा कि कुछ संदिग्ध लगने पर किसे कॉल/संपर्क करना है। आयोजन के हिस्से के रूप में, बच्चों को स्थानीय पुलिस स्टेशन का दौरा कराया जाए ताकि वे पुलिस अधिकारियों के साथ खुल के संवाद कर सकें।

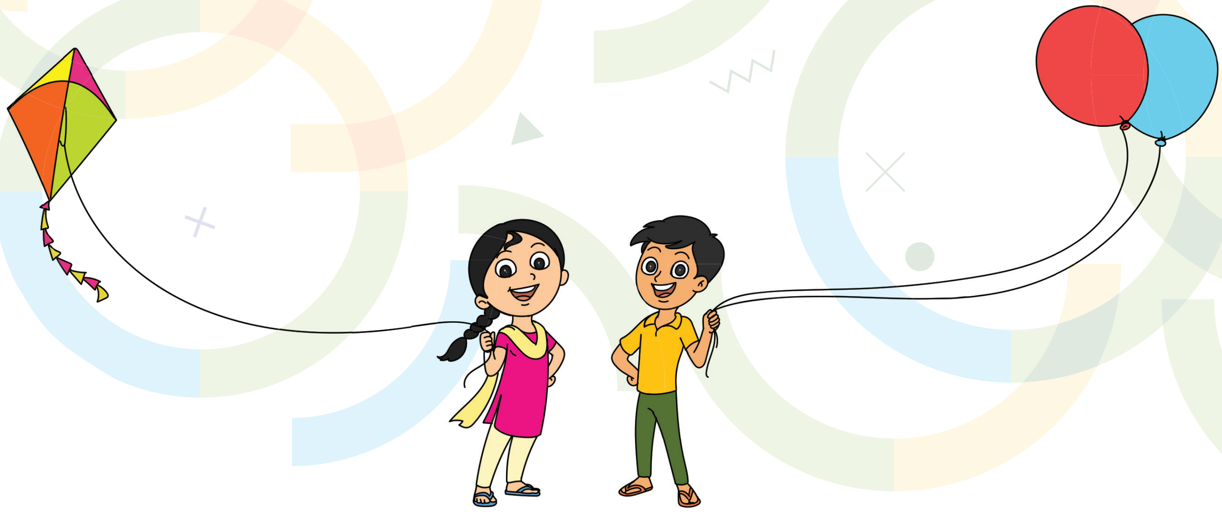

सत्र 13

बच्चों के साथ संचार हेतु रचनात्मक टूल

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को बच्चों के साथ संचार के लिए प्रभावी टूल को समझने में मदद करेगा।

आवश्यक सामग्री

कहानी की किताब, संवाद कार्ड

अवधि

45 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या हम बच्चों से उसी तरह बात करते हैं जैसे हम बड़ों से करते हैं?

चर्चा शुरू करें और निम्न पर प्रकाश डालें:
बच्चे कहानियों तथा गतिविधियों के माध्यम से अधिक प्रभावी रूप से समझते हैं।

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से चर्चा करें कि क्या वे अपने समुदाय में बच्चों के साथ होने वाले भेदभाव को पहचानने में सक्षम थे। इस स्थिति को सुधारने का क्या उपाय हो सकता है?

गतिविधि

- 'बच्चे किसी विषय को कैसे समझते हैं' इसे लेकर प्रतिभागियों के साथ चर्चा शुरू करें।
- पूछें: क्या बच्चा किसी विषय को भाषण (लेक्चर) के माध्यम से या कहानी के माध्यम से अधिक प्रभावी रूप समझेगा?
- चर्चा के अंत में इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि बच्चे श्रव्य, दृश्य और गतिबोध (किनेस्थेटिक्स) आदि के माध्यम से भी अलग–अलग तरह से सीखते हैं, इसलिए बच्चों को समझाने के लिए विभिन्न प्रकार के टूल का उपयोग करना महत्वपूर्ण है।

- समझाएं कि आज के सत्र में हम दो तरह के टूल का इस्तेमाल करेंगे जैसे कि कहानी की किताब और संवाद कार्ड।
- समूह में माधव और मुस्कान कॉमिक श्रृंखला की कुछ कॉपियां साझा करें।
- समूह प्रस्तुति की जाने वाली किताब दें और किसी एक विषय पर चर्चा शुरू करें।
- सहभागी तरीके से एक कॉमिक से एक कहानी पढ़ें और समझाएं कि इन किताबों का उपयोग बच्चों के साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के लिए किया जा सकता है।

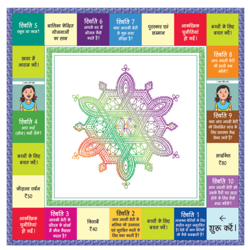

- इसके बाद, प्रतिभागियों के साथ बाल विवाह मुक्त राजस्थान पैकेज के संवाद कार्ड साझा करें।
- सहभागी तरीके से, प्रतिभागियों को शामिल करें और सरिता की कहानी के माध्यम से बाल विवाह के मुद्दे पर चर्चा करें।
- बताएं कि कैसे कार्ड का उपयोग करके जटिल मुद्दों पर बच्चों के साथ सरल तरीके से बात की जा सकती है।
- सत्र के बाद कहानी की किताबों और संवाद कार्डों के लाभों पर चर्चा करें।

सीख का सार

बेहतर संचार मुख्य संदेश को याद रखने में मदद करता है।

चित्र और कहानी प्रारूप प्रभावी संचार में मदद करते हैं, खासकर बच्चों के साथ।

सीख पर विचार करें

जब आप घर वापस जाएं, तो उपलब्ध कुछ सामग्रियों जैसे कॉमिक पुस्तकों/समाचार पत्रों का उपयोग करके या वीडियो के माध्यम से अपने बच्चों से बात करें और देखें कि क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि बच्चा जानकारी कैसे प्राप्त करता है।

स्कूल और आंगनवाड़ी केंद्र में जांचें कि क्या कोई कहानी की किताबें, संवाद कार्ड, बोर्ड गेम हैं जो बच्चों से प्रभावी तरीके से बात करने में मदद कर सकते हैं।

संदर्भ

- बाल विवाह समाप्त करने पर पैकेजः https://drive.google.com/drive/folders/1KTC7J7N46CPzarp7ev0IPzaLJPUSs65s?usp=sharing
- माधव और मुस्कान कॉमिक श्रृंखलाः https://drive.google.com/drive/folders/1mzG_ushtTsY8YPz1ebOXQa8FvXFhj8QL?usp=sharing
- तारुण्य के प्रासंगिक संचार सामग्रीः https://prachicp.com/tarunya/community-key-influencer.html

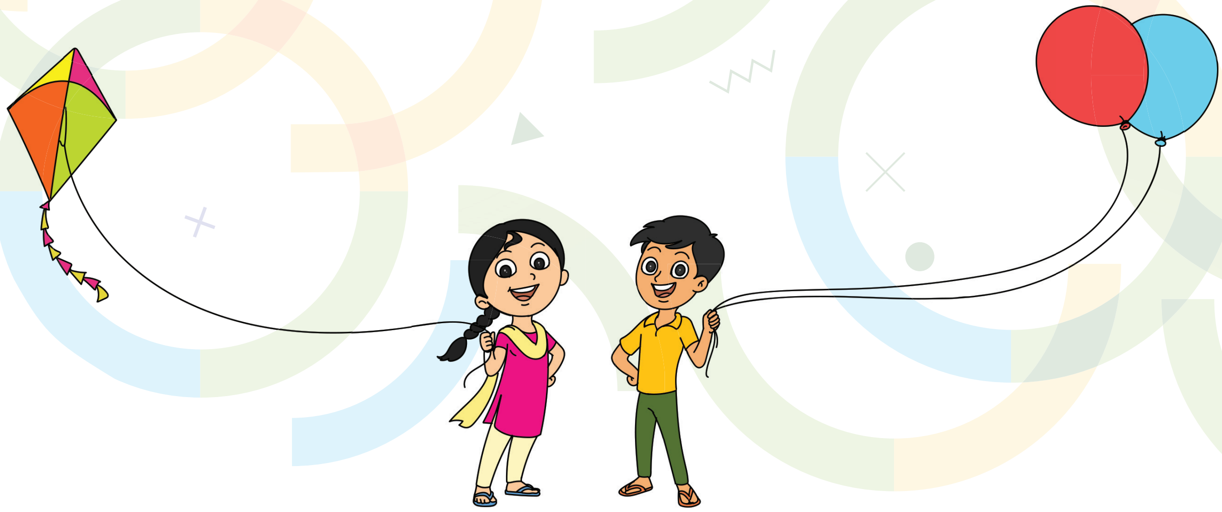

सत्र 14

व्यापक बाल संरक्षण हेतु टीमवर्क और सहयोग

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि टीम के अन्य सदस्यों के साथ कैसे काम करना और सहयोग करना चाहिए।

आवश्यक सामग्री

चार कुर्सियां (हैंडल के बिना)

अवधि

45 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार, साथ ही बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- टीम कैसे काम करती है?
- टीम के प्रत्येक सदस्य की क्या भूमिका है?
- किस प्रकार के नेतृत्व से बेहतर परिणाम आता है?

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से चर्चा करें कि क्या वे ऐसे उपकरण/टूल (खेल, कहानी की किताबें, कॉमिक्स आदि) ढूंढ़ने में सक्षम थे जिनका उपयोग बच्चों के साथ संवाद करने के लिए किया जा सकता है।

गतिविधि

- कमरे/जगह के बीच में चार कुर्सियां रखें और चार वॉलंटियर को बैठने के लिए बुलाएं।
- अन्य प्रतिभागियों से कहें कि ध्यान से देखें कि क्या होने वाला है।
- अब, प्रतिभागियों को कुर्सी पर बैठकर पीछे की ओर झुकने के लिए कहें और अपने कंधों को अपने पीछे वाले व्यक्ति की जांघों पर टिकाने के लिए कहें, जैसे कि वे अपने पीछे वाले व्यक्ति की गोद में झुक रहे हों। एक बार यह हो जाए तो धीरे–धीरे कुर्सियां हटाना शुरू करें। यहां आप एक सुगमकर्ता की भूमिका निभा रहे हैं और टीम का नेतृत्व कर रहे हैं।
- धीरे–धीरे और सावधानी से एक–एक करके चारों कुर्सियों को हटा दें। एक बार जब चारों कुर्सियां हटा दी जाएंगी, तो ऐसा लगेगा कि चारों वॉलंटियर बहुत ही कम प्रयास में एक–दूसरे का सहयोग कर रहे हैं। ध्यान रखें कि यदि एक व्यक्ति गिरता है, तो समूह भी गिर जायेगा।
- एक बार जब गतिविधि पूरी हो जाए, तो सभी वॉलंटियर को बधाई दें और उन्हें अपनी सीटों पर वापस जाने के लिए कहें।

प्रतिभागियों से उनकी प्रतिक्रिया पूछेंः

- जब उन्होंने इस गतिविधि को करने के लिए वॉलंटियर किया तो उन्हें कैसा लगा और गतिविधि आगे बढ़ने पर उन्होंने कैसा महसूस किया।
- क्या कोई हिचकिचाहट या डर था?
- क्या गतिविधि के दौरान किसी भी समय उन्हें लगा कि यह काम चुनौती से भरा था?
- क्या उनमें से किसी ने महसूस किया कि संभावित चुनौतियों के कारण गतिविधि को छोड़ देना चाहिए?
- पर्यवेक्षकों में से विभिन्न सदस्यों द्वारा निभाई गई भूमिका को समझाने के लिए कहें।

सत्र के अंत में, प्रतिभागियों को टीम वर्क पर गोल्ड फिल्म का यह वीडियो दिखाएंः
https://www.youtube.com/watch?v=FiSXq0M6v4E

सीख का सार

भरोसा कायम करना: टीम के सभी सदस्यों पर विश्वास होना बहुत जरूरी है। बाल संरक्षण गतिविधियों के प्रभावी होने के लिए विश्वास महत्वपूर्ण है। यह भी जरूरी है कि बच्चे अपनी सुरक्षा के लिए काम करने वाली टीमों पर भरोसा कायम कर सकें।

टीम में कार्य करना: यदि टीम के सदस्यों में से कोई एक कमजोर कड़ी साबित हो तो भी कार्य असफल हो सकता है। कई बार तस्करी (Trafficking), बाल श्रम, बाल शोषण, बाल विवाह आदि से जुड़े मुद्दे काफी जटिल होते हैं। ऐसे मामलों का समाधान एक सुव्यवस्थित टीम के माध्यम से ही किया जा सकता है।

सुगमकर्ता की सहायक भूमिका: जैसा कि गतिविधि के दौरान बताया गया है कि यह स्पष्ट है कि सुगमकर्ता को खुद पर भरोसा होना चाहिए और सहायक भूमिका निभानी चाहिए। इसी तरह, बाल संरक्षण पहल का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति को टीम के सदस्यों का स्पष्टता और आत्मविश्वास के साथ नेतृत्व करने में सक्षम होना चाहिए एवं टीम के सदस्यों को जिम्मेदारी लेने के लिए सक्षम बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि सरपंच स्थायी समिति का अध्यक्ष है, तो उसे स्थायी समिति के सदस्यों को मामलों के समाधान ढूंढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

सीख पर विचार करें

लिंक पर जाकर केस स्टडी पढ़ें और गतिविधि में सवालों के जवाब दें। केस स्टडी उस टीम की स्थिति प्रस्तुत करती है जो बाल संरक्षण का एक कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

https://newconceptcdc.org/etraining/CP_HINDI_ACTIVITY/module7hindi/M7_S4_activity1_Hindi/

सुगमकर्ता के लिए नोट

- गतिविधि शुरू करने से पहले, प्रतिभागियों को सहज बनाने की कोशिश करें क्योंकि उन्हें डर हो सकता है कि गतिविधि के दौरान वे गिर सकते हैं। उन्हें बताएं कि जो भाग नहीं लेना चाहते वे केवल देख सकते हैं, इसके लिए कोई दबाव नहीं है और उनके साथ साझा करें कि यह गतिविधि सुरक्षित है और अन्य समूहों के साथ कई बार की जा चुकी है।
- प्रतिभागियों को बताएं कि इस गतिविधि के दौरान वे एक या दो बार असफल हो सकते हैं, इसलिए इसे पूरे ध्यान और जोश के साथ पूरा करें।

वैकल्पिक गतिविधि

- प्रतिभागियों को स्थिति समझाएं: एक एलियन गलती से पृथ्वी पर आ गया है और अपने आस–पास के माहौल के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश कर रहा है। एलियन सूरज के पास रहता था, इसलिए पृथ्वी का तापमान उसे बहुत ठंडा लग रहा है और वो लगातार काँप रहा है। उसने पृथ्वी में बिताए कुछ समय में छह शब्द सीख लिए हैं: *बाएं, दाएं, ऊपर, नीचे, हां* और *नहीं*। इन शब्दों के अलावा, एलियन कोई भाषा नहीं समझता। वह भयभीत है और वापस जाने के लिए बेताब है। लेकिन यदि जल्दी ही उसे स्वेटर नहीं पहनाया गया तो वह जीवित नहीं बच पाएगा।
- गतिविधि का उद्देश्य है कि बिना छुए जल्दी से जादू को स्वेटर पहनाया जाए।
- *योजना टीम* बनाने के लिए 5 वालंटियर को आमंत्रित करें। कार्यान्वयन टीम बनाने के लिए अन्य 5 वालंटियर को आमंत्रित करें। बाकी प्रतिभागियों को मिलाकर *पर्यवेक्षक टीम* बनाएं। एक प्रतिभागी जादू (एलियन) की भूमिका निभाएगा।
- *योजना टीम* आंतरिक रूप से चर्चा करेगी और *कार्यान्वयन टीम* को जादू को स्वेटर पहनाने के तरीके के बारे में निर्देश देने के लिए रणनीति बनाएगी। उन्हें योजना बनाने के लिए 3–4 मिनट दिए जाएंगे। याद रखें कि केवल छह शब्दों का उपयोग किया जा सकता है जो जादू समझता है।
- अब *योजना टीम* कार्यान्वयन टीम को अपनी योजना बताएगी। पर्यवेक्षक प्रभावशीलता और स्पष्टता के लिए संचार प्रक्रिया को देखेंगे।
- *कार्यान्वयन टीम* को प्राप्त निर्देशों के आधार पर अपनी योजना बनाने के लिए 3–4 मिनट दिए जाएंगे। फिर वे अगले 3 मिनट के भीतर जादू को स्वेटर पहनाने का प्रयास करेंगे।

योजना टीम के लिए निर्देश

- रणनीति बनाएं
- जादू को स्वेटर पहनाने के तरीके पर कार्यान्वयन टीम के साथ संवाद करें
- जादू के पास पृथ्वी पर बहुत सीमित समय है, इसलिए उन्हें बहुत तेज होना होगा
- जादू को छुआ नहीं जा सकता, नहीं तो वह ब्लास्ट हो जाएगा
- जादू केवल 6 शब्द समझता है: ' ऊपर', 'नीचे', 'बाएँ', 'दाएँ', 'हाँ', 'नहीं'
- यदि जादू को एक ही समय में कई निर्देश दिए जाएं तो वह भ्रमित हो जाता है
- यदि जादू को बहुत सारे लोग घेर लेते हैं तो वह घबरा जाता है और डर जाता है

कार्यान्वयन टीम के लिए निर्देश

- निर्देशों के आधार पर योजना बनाएं
- 3 मिनट के भीतर जादू को स्वेटर पहनाने का प्रयास करें
- जादू के पास भीड़भाड़ न करें और उसे छूने का प्रयास न करें

जादू के लिए निर्देश

- आप एक एलियन हैं जो गलती से धरती पर आ गये हैं। आप कांप रहे हैं और आपको बहुत ठंड लग रही है। यदि जल्दी ही आपकी ठण्ड दूर नहीं हुई तो जान भी जा सकती है।
- समय के साथ–साथ आप 6 शब्दों को समझने लगे हैं: 'ऊपर', 'नीचे', 'बाएँ', 'दाएँ', 'हाँ', 'नहीं'
- यदि आपको एक ही समय में कई निर्देश दिए जाएं तो आप भ्रमित हो जाते हैं
- अगर बहुत सारे लोग आपको घेर लेते हैं तो आप घबरा जाते हैं और डर जाते हैं
- यदि कोई भी आपको छूएगा तो आप विस्फोट से मर सकते हो।

गतिविधि के अंत में प्रतिभागियों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- योजना टीम और कार्यान्वयन टीम ने क्या अच्छा काम किया?
- प्रत्येक टीम के सामने मुख्य चुनौतियाँ क्या थीं?
- संचार ने कार्य को कैसे प्रभावित किया? क्या यह स्पष्ट था या नहीं?
- क्या कोई कमजोर कड़ी थी?
- कौन सी रणनीतियाँ परिणाम को सुधार सकती थीं?
- अपने अनुभवों को आप यहां कैसे लागू कर सकते है?

साझा करें कि कभी–कभी योजना टीम का दृष्टिकोण कार्यान्वयन टीम को ठीक से नहीं बताया जाता है जिसके कारण क्रियान्वयन प्रभावित हो सकता है।

सीख का सार

सफल टीमवर्क में स्पष्ट संचार, प्रभावी योजना, समन्वय और पारस्परिक सहयोग शामिल है।

सहयोग की कमी के कारण विफलता हो सकती है, जैसा कि गतिविधि में देखा गया।

गलतियों से सीखना और आवश्यक समायोजन करना भविष्य के कार्यों में बेहतर परिणाम ला सकता है।

टीम के प्रत्येक सदस्य का योगदान मूल्यवान है और एक संगठित इकाई के रूप में काम करना सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। फायदा या नुक्सान किसी भी व्यक्ति विशेष का नहीं बल्कि पूरी टीम का होता है।

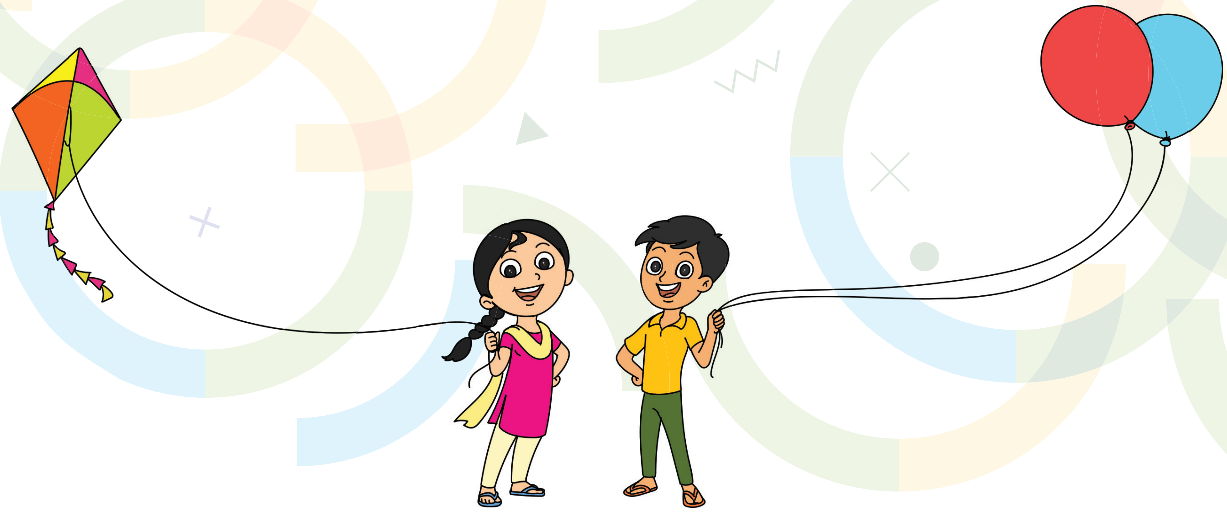

सत्र 15

प्रभावी बाल संरक्षण के लिए संचार योजनाओं का कार्यान्वयन

परिचय

यह सत्र प्रतिभागियों को यह समझने में मदद करेगा कि प्रभावी बाल संरक्षण के लिए संचार योजनाओं को कैसे क्रियान्वित किया जाए।

आवश्यक सामग्री

पेपर की शीट और पेन

अवधि

60 मिनट

प्रतिभागी

ग्राम स्तर के पदाधिकारी जैसे स्थायी समिति के सदस्य, बालिका समूह, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्य, एनजीओ सदस्य, युवा/किशोर समूह/*बालिका मंच* के अन्य कार्यान्वयन भागीदार के साथ बाल संरक्षण गतिविधियों में लगे क्षेत्र–स्तरीय पदाधिकारी।

तैयारी

समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर शुरुआत करें:

- क्या आप कुछ सबसे यादगार टीवी विज्ञापन या किसी सरकारी कार्यक्रम या अभियान का नारा याद कर सकते हैं?
- इनके मुख्य संदेश में ऐसा क्या है जो इसे इतना यादगार बनाता है?

पुनरावलोकन: किसी भी वॉलंटियर से पिछली गतिविधि के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में बताने के लिए कहें। प्रतिभागियों से चर्चा करें कि क्या वे गतिविधि के प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम थे। साथ ही यह भी पूछें कि एक टीम के समेकित रूप से काम करने के लिए क्या महत्वपूर्ण है।

गतिविधि

- प्रतिभागियों को बराबर संख्या में 4–5 समूहों में बांटें। समूह का प्रत्येक सदस्य बाल और महिला कल्याण संबंधी स्थायी समिति के एक सदस्य का प्रतिनिधित्व करेगा। वे ग्राम प्रधान, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा, स्कूल के प्रिंसिपल, एसएचजी सदस्य, अनुसूचित जाति/जनजाति आदि के सदस्य हो सकते हैं।
- प्रत्येक समूह को उनके समुदाय में बाल संरक्षण मुद्दे से संबंधित एक–एक परिदृश्य दिया जाएगा। जैसे कि 18 वर्ष से पहले स्कूल छोड़ने वाले बच्चे, पास की फैक्ट्री में काम करने का विकल्प चुनने वाले बच्चे; स्कूल में शारीरिक दंड की घटनाओं की रिपोर्ट करने वाले बच्चे, स्कूल जाते और लौटते समय बच्चों की सुरक्षा, विशेष रूप से लड़कियों के मामले में, बाल विवाह की रोकथाम।
- समूहों से कहें कि बच्चों और महिला कल्याण पर स्थायी समिति के सदस्यों के रूप में, उनके समुदाय में इन समस्याओं के समाधान हेतु उन्हें एक संचार योजना तैयार करने की आवश्यकता सुनिश्चित करनी है।
- उन्हें बताएं कि संचार योजना की समय सीमा होनी चाहिए और इसमें स्थायी समिति के प्रत्येक सदस्य को भूमिकाएं और जिम्मेदारियां सौंपी जानी चाहिए। उनके साथ कोई भी टेम्पलेट (खाका) साझा न करें।
- योजना बनाने के लिए समूहों को 20 मिनट का समय दें। उसके बाद प्रत्येक समूह अपनी योजना प्रस्तुत करेगा।

संचार कार्य योजना के लिए प्रारूप (राज्य–असम)

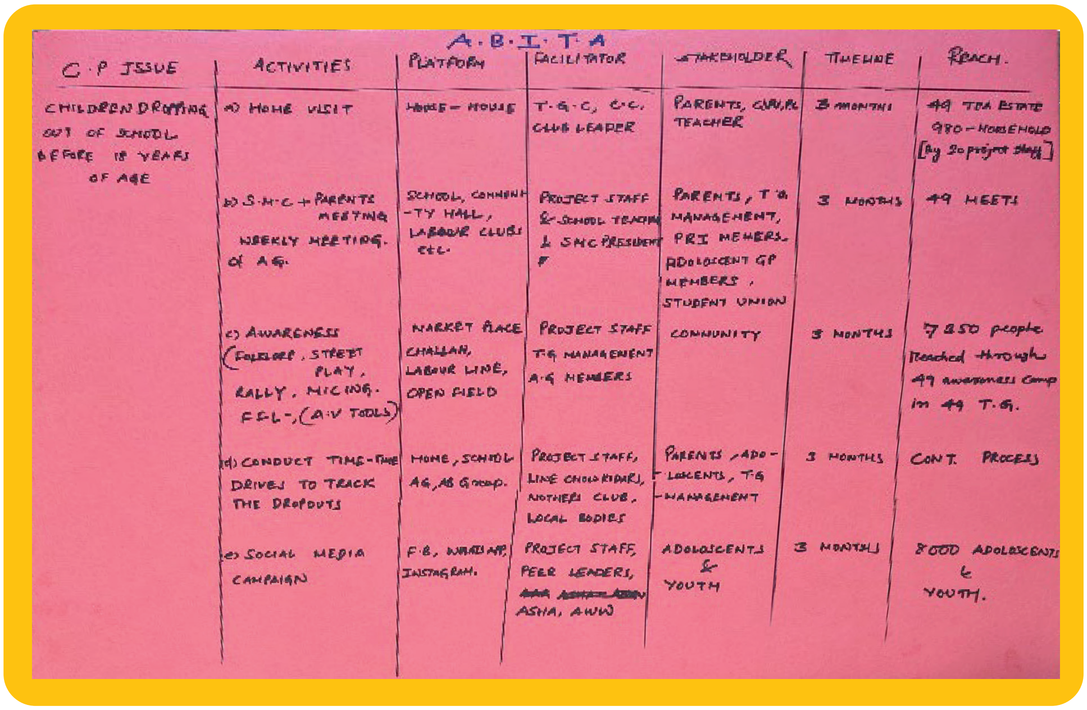

A.B.I.T.A

C.P ISSUE	ACTIVITIES	PLATFORM	FACILITATOR	STAKEHOLDER	TIMELINE	REACH.
CHILDREN DROPPING OUT OF SCHOOL BEFORE 18 YEARS OF AGE	a) HOME VISIT	HOUSE – HOUSE	T.G.C, C.C, CLUB LEADER	PARENTS, GVV,PC TEACHER	3 MONTHS	49 TEA ESTATE 980 – HOUSEHOLD [By 20 project staff]
	b) S.M.C + PARENTS MEETING WEEKLY MEETING. OF A.G.	SCHOOL, COMMUNITY HALL, LABOUR CLUBS ETC.	PROJECT STAFF & SCHOOL TEACHER & SMC PRESIDENT	PARENTS, T.G MANAGEMENT, PRI MEMBERS. ADOLESCENT GP MEMBERS, STUDENT UNION	3 MONTHS	49 MEETS
	c) AWARENESS (FOLKLORE, STREET PLAY, RALLY, MICING. FFL-, (A.V TOOLS)	MARKET PLACE CHALLAN, LABOUR LINE, OPEN FIELD	PROJECT STAFF T.G MANAGEMENT A.G MEMBERS	COMMUNITY	3 MONTHS	7850 people reached through 49 awareness Camp in 49 T.G.
	d) CONDUCT TIME-TIME DRIVES TO TRACK THE DROPOUTS	HOME, SCHOOL AG, AB Group.	PROJECT STAFF, LINE CHOWKIDARS, MOTHERS CLUB, LOCAL BODIES	PARENTS, ADOLESCENTS, T.G MANAGEMENT	3 MONTHS	CONT. PROCESS
	e) SOCIAL MEDIA CAMPAIGN	F.B, WHATSAPP, INSTAGRAM.	PROJECT STAFF, PEER LEADERS, ~~[illegible]~~ ASHA, AWW	ADOLESCENTS & YOUTH	3 MONTHS	8000 ADOLESCENTS & YOUTH.

संचार कार्य योजना के लिए प्रारूप (राज्य–उत्तर प्रदेश)

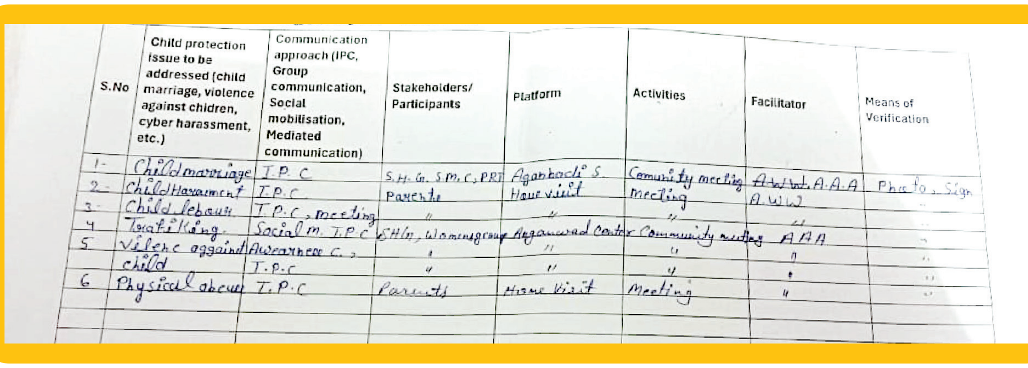

S.No	Child protection issue to be addressed (child marriage, violence against chidren, cyber harassment, etc.)	Communication approach (IPC, Group communication, Social mobilisation, Mediated communication)	Stakeholders/ Participants	Platform	Activities	Facilitator	Means of Verification
1-	Child marriage	I.P.C	S.H.G. S.M.C. PRI	Aganbadi S.	Comunity meeting	A.W.W. A.A.A	Photo, Sign
2-	Child Harasment	I.P.C	Parents	House visit	Meeting	A.W.W	"
3-	Child lebour	I.P.C, meeting	"	"	"	"	"
4	Trafiking	Social m. I.P.C	SHG, Women group	Aganwadi Center	Community meeting	A.A.A	"
5	Vilence against child	Awearness C., I.P.C	"	"	"	"	"
6	Physical abeuse	I.P.C	Parents	Home visit	Meeting	"	"

सुझाए गए प्लेटफार्म

- बाल एवं महिला कल्याण पर ग्राम स्तरीय स्थायी समिति
- एसएचजी
- पीआरआई
- किशोर समूह
- बालिका मंच
- एसएमसी
- एनवाईकेएस/एनएसएस
- पीयर एजुकेटर समूह
- वीएचएसएनडी

बाल संरक्षण मुद्दे

- बाल विवाह
- बाल श्रम एवं बंधुआ मजदूरी
- बच्चों के विरुद्ध हिंसा
- स्कूल छोड़ने वाले बच्चे
- बच्चों की तस्करी (Trafficking)
- अपहरण
- ऑनलाइन सुरक्षा

प्रमुख संचार दृष्टिकोण

पारस्परिक संचार (आईपीसी): आईपीसी, दो–तरफा संचार, दो या दो से अधिक लोगों के बीच संचार प्रक्रिया है।

समूह संचारः एक समूह के कई सदस्यों को संदेश भेजना और प्राप्त करना।

सामाजिक लामबंदी/मोबिलाइजेशनः ऐसी प्रक्रिया जो किसी विशेष उद्देश्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने और मांग करने के लिए राष्ट्रीय या स्थानीय स्तर पर भागीदारों और सहयोगियों को शामिल करती है और प्रेरित करती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोग इच्छित परिणाम तक पहुंचने के लिए समन्वित तरीके से काम करें, यह दो–तरफा संचार को अपनाता है।

मध्यस्थ संचार (मीडिएटेड कम्युनिकेशन): सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग से किया जाने वाला संचार। इसमें आईवीआरएस (IVRS), व्हाट्सएप (WhatsApp), फेसबुक (Facebook), इंस्टाग्राम (Instagram) जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग शामिल है। इसके कुछ उदाहरण हो सकते हैं– सोशल मीडिया पर तस्वीरें साझा करना, जिला और ग्राम स्तर पर हितधारकों के लिए सोशल मीडिया समूह का निर्माण, प्रमुख मुद्दों पर छोटी रील या वीडियो बनाना, इत्यादि।

अभियानः अभियान आमतौर पर विशिष्ट मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और ज्ञान बढ़ाने के लिए किए जाते हैं। वे संचार के एक–तरफा तरीके पर आधारित होते हैं और मध्य–मीडिया, आउटडोर–मीडिया और मास–मीडिया जैसे मीडिया के मिश्रण को अपनाते समय सबसे प्रभावी होते हैं।

मिड–मीडिया में एक समुदाय को संदेश देने के लिए संचार के स्थानीय, कभी–कभी पारंपरिक रूप जैसे कठपुतली शो, नाटक, नुक्कड़ नाटक का उपयोग होता है।

आउटडोर–मीडिया संदेश देने के लिए सार्वजनिक स्थानों जैसे बिलबोर्ड, ट्रेन, बस या वाहन के विज्ञापन स्थानों का उपयोग करता है।

मास मीडिया में लोगों के बड़े वर्ग तक संदेश पहुंचाने के लिए प्रिंट (समाचार पत्र, पत्रिकाएं), टेलीविजन (धारावाहिक, पीएसए, टॉक शो, फिल्में) और रेडियो (टॉक शो, पीएसए, ऑडियो नाटक) का उपयोग होता है।

प्रशिक्षण को क्रियान्वित करने के लिए योजना का प्रारूप

नाम	पद	जिला	ब्लॉक	योजना स्वीकृतकर्ता
				पद

क्रम संख्या	पहचाने गये पद/व्यक्ति का नाम	चिन्हित ग्राम पंचायतें									
		ग्राम पंचायत 1	ग्राम पंचायत 2	ग्राम पंचायत 3	ग्राम पंचायत 4	ग्राम पंचायत 5	ग्राम पंचायत 6	ग्राम पंचायत 7	ग्राम पंचायत 8	ग्राम पंचायत 9	ग्राम पंचायत 10
1	पीआरआई										
2	वार्ड सदस्य										
3	आंगनवाड़ी सदस्य										
4	स्कूल शिक्षक										
5	एसएचजी सदस्य										
6	युवा क्लब सदस्य										
7	महिला समूह										
8	एसएमसी सदस्य										
9	डीसीपीयू परामर्शदाता										
10	डीसीपीयू स्टाफ										
11	...										
12	...										

	प्रशिक्षण तिथियाँ								
	मंच	सत्र 1	सत्र 2	सत्र 3	सत्र 4	सत्र 5	सत्र 6	सत्र 7	सत्र 8
ग्राम पंचायत 1									
ग्राम पंचायत 2									
ग्राम पंचायत 3									
ग्राम पंचायत 4									
ग्राम पंचायत 5									
ग्राम पंचायत 6									
ग्राम पंचायत 7									
ग्राम पंचायत 8									
ग्राम पंचायत 9									
ग्राम पंचायत 10									

निगरानी चेकलिस्ट

- प्रशिक्षण के परिणामों के आकलन हेतु फॉलोअप प्रपत्र
- प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया और अनुभव हेत साक्षात्कार एवं प्रश्नावली
- प्रशिक्षण की प्रभावशीलता पर चर्चा और सुधार के क्षेत्रों की पहचान
- प्रशिक्षण में प्राप्त सामग्री/संसाधनों की जाँच और भविष्य में उपयोग के लिए उनकी उपयुक्तता का आकलन
- प्रशिक्षण के अगले चरणों के लिए एक आगामी कार्य योजना

सीख का सार

एक बार सभी प्रतिभागियों की प्रस्तुति हो जाने के बाद, उनके साथ एक प्रभावी संचार में क्या होना चाहिए, साझा करें।

स्थिति का विश्लेषण करना: मौजूदा स्थिति की विस्तृत समझ विकसित करना।

हितधारक की पहचान और विश्लेषण करना: व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामुदायिक, संगठनात्मक स्तर पर इस मुद्दे से संबंधित सभी उपयुक्त हितधारकों की पहचान करना।

उद्देश्यों को परिभाषित करना: उदाहरण के लिए- बाल श्रम को समाप्त करने हेतु समुदायों को बाल श्रम के बुरे प्रभाव पर जानकारी की आवश्यकता होगी और कैसे बच्चों के बौद्धिक विकास में शिक्षा योगदान दे सकती है और भविष्य में उच्च आय के साथ बेहतर नौकरियां सुरक्षित करने के लिए कौशल हासिल करने में मदद कर सकती है।

दर्शकों की पहचान करना: ऐसे प्रतिभागियों की पहचान करना, जिनके व्यवहार में बदलाव हस्तक्षेप का उद्देश्य हो। यह जरूरी नहीं कि ये वे हैं जो समस्या से सबसे अधिक प्रभावित हैं, बल्कि इनके व्यवहार में बदलाव से कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने की संभावना सबसे अधिक है।

संचार संदेश, तरीके, चैनल, प्लेटफॉर्म और सामग्रियां: प्रतिभागियों का वर्गीकरण विभिन्न संदेशों को समझने में मदद करता है जिसमें सुरक्षात्मक और प्रोत्साहन देने वाले संदेश शामिल हो सकते हैं जैसे बच्चों को शिक्षा का अधिकार है, बच्चों को स्कूलों में जाना चाहिए, बच्चों को परिवारिक और स्कूल स्तर की गतिविधियों में भाग लेने के अवसर दिए जाने चाहिए आदि।

चैनल और आवश्यक सामग्री: संचार चैनलों में मास मीडिया, सोशल मीडिया और ट्रांसमीडिया एवं सामग्रियों में प्रिंट, ऑडियो, वीडियो सामग्री शामिल हैं। प्लेटफॉर्म पारस्परिक (घर का दौरा), समूह (आंगनवाड़ी केंद्रों पर समूह बैठक या समुदाय आधारित प्लेटफॉर्म (वीएचएसएनडी) हो सकते हैं। क्षेत्रीय अभिसरण (कनवर्जेंस) के लिए प्लेटफॉर्म में स्कूल-आधारित प्लेटफॉर्म जैसे माता-पिता शिक्षकों की बैठकें, मीना और राजू मंच; समुदाय का लाभ उठाना शामिल हो सकता है; अभिसरण के लिए सामुदायिक मंच पर ग्राम बैठकें, वीएचएसएनडी, किशोर स्वास्थ्य दिवस आदि हो सकते हैं।

संचार के लिए अपनाया गया दृष्टिकोण और तरीका: पारस्परिक संचार, समूह संचार, जन संचार, सामुदायिक लामबंदी और बहुक्षेत्रीय सहयोग जिसमें संचार प्रयासों में सभी उपयुक्त क्षेत्र शामिल होने चाहिए।

योजना बनाना: इस योजना में भूमिकाओं तथा जिम्मेदारियों और समय सीमा के साथ एसबीसी गतिविधियों का एक खाका विकसित करना शामिल है।

सीख पर विचार करें

सुगमकर्ता से फार्मेट लें और अपने समुदाय में बाल यौन शोषण के बारे में जागरूकता फैलाने के अभियान के लिए एक संचार योजना विकसित करें। योजना को ग्राम प्रधान के साथ साझा करें और जिला बाल संरक्षण यूनिट की मदद से अपने समुदाय में इसे अमल करने का समर्थन करें।

संलग्नक 1

1. यूएनसीआरसी पर सुगमकर्ता के लिए नोट्स

बच्चे के अधिकारों के लिए यूएनसीआरसी के तहत सामान्य आवश्यकताएं

अनुच्छेद–1: 18 वर्ष से कम आयु के सभी लोगों को इस यूएनसीआरसी समझौते के तहत सभी अधिकार प्राप्त हैं।

अनुच्छेद–2: यह समझौता सभी पर समान रूप से लागू होता है चाहे उनका धर्म, योग्यता, पेशा या परिवार कुछ भी हो।

अनुच्छेद–3: बच्चों के लिए काम करने वाले सभी सरकारी और गैर–सरकारी संगठन बच्चों के सर्वोत्तम हित के लिए काम करेंगे।

अनुच्छेद–4: सरकार को बच्चों को ये सभी अधिकार प्रदान करने होंगे।

अनुच्छेद–6: बच्चों को जीने का अधिकार है। सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे जीवित रहें और विकसित हों।

अनुच्छेद–12: यदि बड़े वयस्क (adult) कोई निर्णय ले रहे हैं जिसका प्रभाव बच्चों पर पड़ सकता है, तो बच्चों को अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अधिकार है। बच्चों को भी यह अधिकार है कि उनकी बातों को गंभीरता से लिया जाए और कोई उन्हें नजरअंदाज न करे।

बच्चों के अस्तित्व और विकास का अधिकार

अनुच्छेद–7: बच्चों को अपने नाम और नागरिकता के कानूनी/वैधानिक पंजीकरण का अधिकार है। बच्चों को जानने का अधिकार है और उन्हें यह भी अधिकार है कि जहां तक संभव हो सके उनके माता–पिता उनकी देखभाल करें।

अनुच्छेद–9: बच्चों को उनके माता–पिता से तब तक अलग नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि यह बच्चे के स्वयं के कल्याण के लिए न हो, जैसे कि जब माता–पिता बच्चे के साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर रहे हों या उन पर ध्यान नहीं दे रहे हों। यदि किसी बच्चे के माता–पिता अलग हो गए हों, तो बच्चे को उन दोनों से मिलने और संपर्क बनाए रखने का अधिकार है, जब तक कि ऐसा करने से बच्चे को कोई नुकसान न हो।

अनुच्छेद–20: यदि बच्चों के परिवार वाले उनकी देखभाल नहीं करते हैं तो ऐसे लोगों को बच्चों की देखभाल करनी चाहिए जो अपने धर्म, संस्कृति और भाषा का सम्मान करते हैं।

अनुच्छेद–22: यदि कोई बच्चा किसी दूसरे देश से शरणार्थी बनकर आया है तो उसे वे सभी अधिकार मिलने चाहिए जो इस देश में जन्मे बच्चे को मिलते हैं।

अनुच्छेद–23: यदि कोई बच्चा दिव्यांग है तो उसे विशेष देखभाल और सहायता दी जानी चाहिए, ताकि वह अपना पूरा जीवन स्वतंत्र रूप से जी सके।

अनुच्छेद–24: बच्चों को बेहतर गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सुविधाएं, स्वच्छ पेयजल, पौष्टिक भोजन और स्वच्छ वातावरण पाने का अधिकार है, ताकि वे स्वस्थ रह सकें।

अनुच्छेद–25: यदि किसी बच्चे की देखभाल माता–पिता के बजाय स्थानीय संस्था द्वारा की जा रही है, तो सरकार को इसकी स्थितियों को समझने के लिए समय–समय पर इसकी समीक्षा करनी चाहिए।

अनुच्छेद–26: यदि कोई बच्चा या उसके माता–पिता गरीब या जरूरतमंद हैं, तो उन्हें सरकार से सहायता प्राप्त करने का अधिकार है।

अनुच्छेद–27: बच्चों को ऐसा जीवन स्तर प्राप्त करने का अधिकार है जो उनकी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से पूरा करता हो। सरकार को उन परिवारों की मदद करनी चाहिए जो अपने बच्चों को ये सब नहीं दे सकते।

अनुच्छेद–28: बच्चों को शिक्षा (पूर्ण शिक्षा) प्राप्त करने का अधिकार है। उनकी प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क होनी चाहिए।

अनुच्छेद–29: बच्चों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उनके व्यक्तित्व और प्रतिभा का विकास करे और साथ ही बच्चों को अपने माता–पिता, अपनी और अन्य संस्कृतियों का सम्मान करने के लिए प्रेरित करे।

अनुच्छेद–30: बच्चों को अपने परिवार की भाषा और रीति–रिवाजों को सीखने और उपयोग करने का अधिकार है, चाहे वह देश के अधिकांश लोगों की भाषा और रीति–रिवाज हों या नहीं।

अनुच्छेद–31: बच्चों को आराम करने, खेलने और विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है।

अनुच्छेद–42: सरकार को इस समझौते के बारे में सभी माता–पिता और बच्चों को सूचित करना चाहिए।

बच्चों की सुरक्षा का अधिकार: किसी भी प्रकार के नुकसान से सुरक्षित रहना

अनुच्छेद–19: सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों की अच्छी तरह से देखभाल की जाए और उन्हें उनके माता–पिता या उनका पालन–पोषण करने वाले अन्य लोगों द्वारा दुर्व्यवहार, हिंसा और उपेक्षा से बचाया जाए।

अनुच्छेद–32: सरकार को बच्चों को ऐसी खतरनाक गतिविधियों से बचाना है जो उनके स्वास्थ्य और शिक्षा को नुकसान पहुंचाती हैं।

अनुच्छेद–36: बच्चों को ऐसी किसी भी गतिविधि से बचाया जाना चाहिए जो उनके विकास को नुकसान पहुंचाती हो।

अनुच्छेद–35: सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चों का अपहरण या उन्हें खरीदा न जाए।

अनुच्छेद–11: यदि कोई किसी बच्चे को जबरन अवैध रूप से देश से बाहर ले जा रहा है तो सरकार को इसे रोकने के लिए उचित कदम उठाने होंगे।

अनुच्छेद–34: सरकार बच्चों को यौन शोषण से बचाये।

अनुच्छेद–37: बच्चों के साथ किसी भी प्रकार का क्रूर, अमानवीय, कठोर या अपमानजनक व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए और न ही उन्हें दंडित किया जाना चाहिए।

अनुच्छेद–40: यदि कोई बच्चा कानून तोड़ता है तो उसे कानूनी सहायता पाने का अधिकार है। उन्हें अन्य वयस्क (adult) कैदियों के साथ जेल में नहीं रखा जाना चाहिए और हमेशा उनके परिवारों के संपर्क में रहना चाहिए। बहुत गंभीर अपराध के मामलों में ही बच्चों को जेल की सजा दी जानी चाहिए।

बच्चों का भाग लेने का अधिकार: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

अनुच्छेद–13: बच्चों को कोई भी जानकारी प्राप्त करने और वह जानकारी किसी अन्य को देने का अधिकार है। इसके अलावा, बच्चों को किसी भी समूह या संगठन में शामिल होने का अधिकार है, जब तक कि इससे बच्चे को कोई नुकसान न हो।

अनुच्छेद–14: बच्चों को वह सोचने का अधिकार है जो वे चाहते हैं, जो वे चाहते हैं उस पर विश्वास करते हैं और अपने धर्म का पालन करते हैं जब तक कि वे किसी और को उस अधिकार का प्रयोग करने से नहीं रोकते हैं। यह बात उनके माता–पिता को उन्हें समझानी चाहिए।

अनुच्छेद–15: बच्चों को एक–दूसरे के साथ जुड़ने और किसी समूह या संगठन में शामिल होने का अधिकार है, जब तक कि इससे किसी अन्य व्यक्ति के अधिकारों में हस्तक्षेप न हो।

अनुच्छेद–16: बच्चों को निजता का अधिकार है। कानून को आपकी जीवनशैली, आपके सम्मान, आपके परिवार और आपके घर पर होने वाले हमलों से आपकी रक्षा करनी चाहिए।

अनुच्छेद–17: बच्चों को जनसंचार माध्यमों के माध्यम से विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है। टेलीविजन, रेडियो और समाचार पत्रों को उन्हें ऐसी जानकारी देनी होगी जिसे वे आसानी से समझ सकें और ऐसी सामग्री को रोकना होगा जिससे बच्चों को नुकसान होता है।

2. बाल अधिकारों पर यूनिसेफ वीडियो

https://www.youtube.com/watch?v=HCYLdtug8sk

3. बाल अधिकारों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान

बच्चों से संबंधित मौलिक अधिकार

- **अनुच्छेद–15 (3)** – बच्चों के लिए विशेष प्रावधान
- **अनुच्छेद–21 ए** – 6–14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा
- **अनुच्छेद–23** – बच्चों सहित मानव तस्करी पर रोक
- **अनुच्छेद–24** – 14 वर्ष से कम उम्र का कोई भी बच्चा हानिकारक व्यवसाय में काम नहीं कर सकता है

बच्चों से संबंधित निदेशक सिद्धांत

- **अनुच्छेद–39 (ई) और (एफ)** – राज्य की नीतियां बच्चों को सुरक्षित करने की दिशा में निर्देशित हों
- **अनुच्छेद–45** – छः वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा के प्रावधान की आवश्यकता
- **अनुच्छेद 51 ए** – 6–14 वर्ष की आयु के अपने बच्चे या वार्ड को शिक्षा के अवसर प्रदान करना, माता–पिता/अभिभावकों का मौलिक कर्त्तव्य

संलग्नक 2: बाल अधिकारों को समझने के लिए चित्र कार्ड

स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय सेवाएं

साईकिल

खुषहाल घर

कपड़े

पिकनिक और मनोरंजन

पोषक आहार तथा साफ पानी

डांट–डपट नहीं

षिक्षा

बात सुनी जाए

स्मार्ट फोन

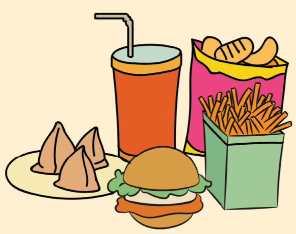

फास्ट फूड

खेल का मैदान

देखभाल करने वाला परिवार

सुरक्षित वातावरण

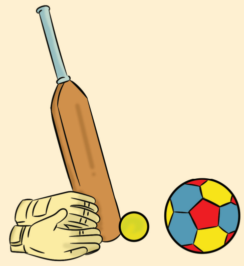

खिलौने और खेलकूद
के सामान

चीज़ें खरीदने की क्षमता

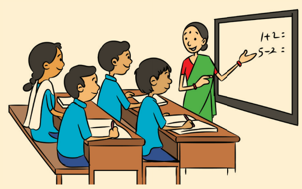

भेदभाव रहित

भागीदारी

जब तक वह सो सके

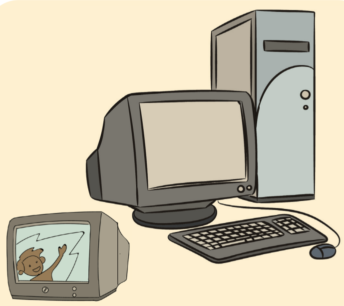

टीवी और कम्प्यूटर